हिन्दी मासिक

नवम्बर 2019

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

नबी मुहम्मद नबी हैं अन्तिम

रब को मानो, नबी को मानो, मानो उन की बातें सब
रब के अतिरिक्त पूज्य नहीं है, करें उसी की पूजा सब
नबी मुहम्मद नबी हैं अन्तिम, उन्ही का आज्ञा पालन हो
मोक्ष प्राप्ति है इसी पर निर्भर, सत्य बात यह माने सब

(सलल्लाहु अलैहि व सल्लम)

इदारा

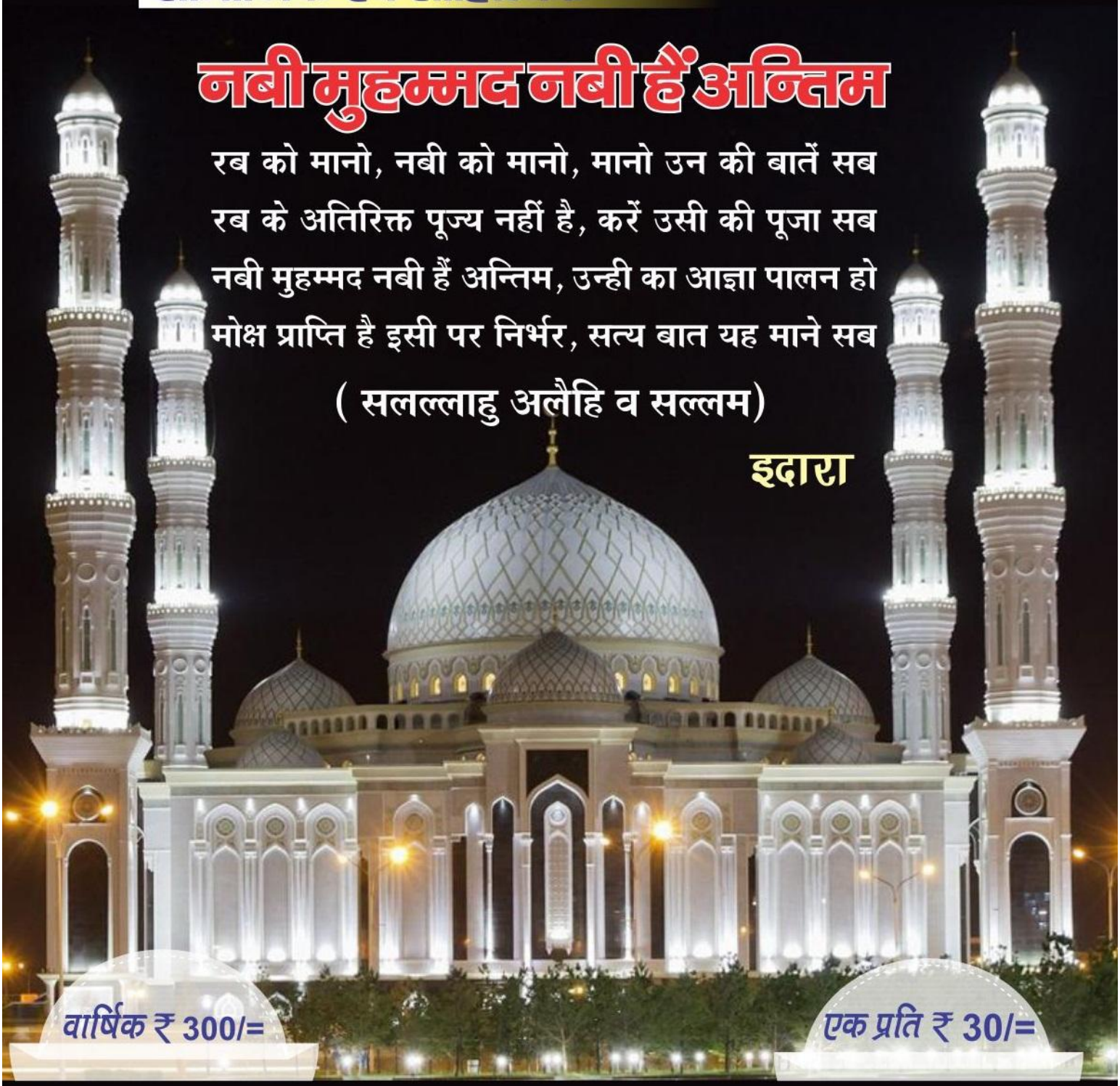

वार्षिक ₹ 300/=

एक प्रति ₹ 30/=

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail : tameer1963@gmail.com
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

सच्चा राही
A/c. No. 10863759642 (Current A/c.)
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.
कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 0522–2740406 अथवा ईमेलः tameer1963@gmail.com पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

नवम्बर, 2019 वर्ष 18 अंक 09

हम सब उनकी उम्मत में हैं
रहेंगे उनके सदा गुलाम

सारे जहाँ के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम
नबीये आख़िर नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम
दीन जहाँ से रुख़्सत था और सारी दुन्या थी गुमराह
चैन जहाँ से ग़ाइब था और सारा आ़लम था बेराह
नफ़्सो शैतां छाये हुए थे दिलों पे उनका क़ब्ज़ा था
क्या होगा अन्जामे इन्सां नहीं थी इसकी कुछ परवाह
रब की रहमत जोश में आई हुआ फ़ैसला रह़मत का
नबी मुह़म्मद जहाँ में आये हुआ फ़ैसला क़ुदरत का
प्यारे नबी तश्रीफ़ ले आये रह़मत उन पर और सलाम
सारे आ़लम में है चर्चा अब तो उनकी रह़मत का
रह़मत लाखों नबी पे या रब और करोड़ों उनपे सलाम
हम सब उनकी उम्मत में हैं रहेंगे उनके सदा गुलाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
ज़िक्रे नबीये पाक सल्ल0	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
मन्ज़ूम दुरूदो सलाम (पद्य)	माहिरुल क़ादिरी	14
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	16
आदर्श शासक	मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी	19
अल्लाह की मदद की कुंजी	मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी	22
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	27
हज़रत मुहम्मद सल्ल0	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	29
सहाबा का मक़ाम व मरतबा	मौ0 सय्यिद बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी	31
अरबी की दो रूबाअ़ियां	हुसैन अहमद	35
इस्लाम में बेटियों के पालन	मौ0 शाह मुईनुद्दीन अहमद नदवी रह0	37
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अनआमः

अनुवाद–

और उन्होंने अल्लाह को जैसे पहचानना चाहिए था न पहचाना जब वे बोले कि अल्लाह ने इंसानों पर तो कुछ उतारा ही नहीं आप पूछिए कि मूसा जिस किताब को लोगों की हिदायत (संमार्ग) और रौशनी के लिए ले कर आए वह किसने उतारी तुम उसको पृष्ठ–पृष्ठ कर के दिखाते हो और बहुत कुछ छिपा जाते हो और उससे तुम्हें वह ज्ञान मिला जो न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप दादा जानते थे[1] आप कह दीजिए कि अल्लाह ने वह (किताब) उतारी फिर उनको छोड़ दीजिए वे अपनी बक बक में लगे रहें[2](91) और यह किताब (कुरआन) भी हम ही ने उतारी जो पूरी की पूरी बरकत है अगलों की पुष्टि (तस्दीक़) है और इसलिए उतारी ताकि आप मक्के वालों को और उसके आस पास के लोगों को डराएं, और जिनको आखिरत का विश्वास है वे इसको मानते हैं वे लोग अपनी नमाज़ों की देख रेख रखते हैं[3](92) और उससे बढ़ कर अन्याय करने वाला कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे या यह कहे कि मुझ पर वह्य (ईश्वाणी) की गई है और वे जो यह कहे मैं भी जल्दी ही इसी तरह उतार दूंगा जैसा अल्लाह ने उतारा है और अगर आप देख लें जब यह अन्याय करने वाले मौत की कठिनाइयों में होंगे और फ़रिश्ते हाथ फैलाए (कहते) होंगे कि निकालो अपनी जान आज तुम्हें अपमान जनक दण्ड दिया जाएगा इसलिए कि तुम अल्लाह पर झूठ कहा करते थे और उसकी निशानियों से अकड़ते रहते थे(93) और जब एक एक करके हमारे पास पहुंच गए जैसे आरम्भ में हमने पैदा किया था और जो कुछ हमने तुम्हें दिया था वह सब पीछे छोड़ आए और हमें तुम्हारे साथ वह सिफ़ारिशी भी दिखाई नहीं देते जिनके बारे में तुम्हारा ख़्याल था कि वे तुम्हारे मामलों में (हमारे) साझीदार हैं, तुम आपस में टूट कर रह गए और तुम जो दावे करते थे वह सब हवा हो गये[4](94) बेशक अल्लाह ही दाने और गुठली को फाड़ने वाला है बे जान से जान को निकालता है और जान वाले से बेजान को निकालने वाला है वह अल्लाह ही है फिर तुम कहाँ उल्टे फिरे जाते हो(95) रात

के परदे को फाड़ कर वही सुबह निकालता है उसने रात को सुकून की चीज़ और सूरज को हिसाब की चीज़ बनाया, यह सब उस ज़ात का ठहराया हुआ है ज़बर्दस्त, खूब जानने वाले का(96) और वही वह ज़ात है जिसने तुम्हारे लिए सितारे बनाए ताकि तुम खुश्की (थल) व तरी (जल) के अंधेरों में उससे रास्ता पा सको, हमने निशानियां विस्तार से बयान कर दी हैं, ऐसे लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं(97) और वही है जिसने तुम को एक अकेली जान से पैदा किया बस एक जगह ठहरने की है और एक जगह सुपुर्द[5] होने की है, हमने निशानियां उन लोगों के लिए खोल–खोल कर बयान कर दी हैं जो समझ रखते हैं(98) वही है जिसने आसमान से पानी उतारा फिर हमने उससे हर प्रकार की उगने वाली चीज़ें पैदा की फिर उससे हमने निकाला जिससे हम जुड़े हुए दाने निकालते हैं[6] और खजूर में से लटकते हुए गुच्छे और अंगूर और ज़ैतून और अनार के बाग़, एक दूसरे से मिलते हुए भी और अलग अलग भी, जब वे फलती हैं तो उनके फलों को और पकने को देखो, इसमें ईमान वालों के लिए बहुत निशानियाँ हैं[7](99) वे अल्लाह के साथ जिनों को साझी ठहराते हैं[8] जब कि अल्लाह ही ने उनको पैदा किया और उन्होंने बिना जाने बूझे अल्लाह के लिए बेटे और बेटियाँ बना लीं[9] उसकी ज़ात पाक है उनके बताए हुए गुणों से बुलंद व उच्च है(100) आसमानों और ज़मीन का नये सिरे से पैदा करने वाला है, उसके संतान कहाँ हो सकती जब कि उसकी कोई पत्नी भी नहीं, हर चीज़ को उसने पैदा किया और वह हर चीज़ का खूब ज्ञान रखता है(101)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. यहूदियों ने तौरेते को अलग अलग पृष्ठों में लिख रखा था जो चीज़ें उनकी इच्छा की न होती थी वह छिपा लेते थे।

2. आप बता दीजिए कि वह किताब अल्लाह ही ने उतारी फिर वे जानें और उनका काम जाने।

3. उम्मुल कुरा मक्का का नाम है यानी सारे शहरों और बस्तियों का आधार, कहते हैं कि दुन्या में सबसे पहले यही जगह बनी और भौगोलिक लेहाज़ से भी इसको केन्द्र का दर्जा प्राप्त है ''वमन हउलहा'' उसके आस पास से मुराद पूरा अरब, फिर पूरी दुन्या, दावत (इस्लाम का प्रचार) की शुरुआत मक्के से हुई फिर यह दावत पूरी दुन्या में पहुंची।

4. जिनको आखिरत का ध्यान है वे मानते हैं और जो हठधर्मी में हैं वे उलटी सीधी बातें

शेष पृष्ठ .....18...पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

मुँह पर तारीफ़ की मुमानियतः–

हजरत अबू मूसा अशअरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक व्यक्ति को किसी व्यक्ति के मुंह पर उसकी तारीफ़ को बढ़ा चढ़ा कर बयान करते सुना तो फरमाया तुम ने उसको हलाक कर दिया, या उसकी पीठ तोड़ दी।

(बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने किसी शख्स की उसकी मौजूदगी में तारीफ़ की गई, और इस वाक्य को आपने कई बार दोहराया, फिर फरमाया अगर तारीफ करना ज़रूरी हो तो यूं कहो कि मेरा गुमान उसके साथ ऐसा और ऐसा है और जैसी उसने तारीफ की है वैसा ही समझता भी है तो हिसाब करने वाला और बदला देने वाला अल्लाह तआला है, यकीन के साथ कोई नहीं कह सकता कि फुलां व्यक्ति अल्लाह के नज़दीक अच्छा है। (बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत मूसा बिन हारिस रज़ि0 से रिवायत है कि उन्होंने हज़रत मिक़दाद रज़ि0 से सुना कि एक आदमी हज़रत उस्मान रज़ि0 की तारीफ करने लगा, तो हज़रत मिक़दाद घुठनों के बल बैठ गये और उसके मुंह पर कंकर मारने शुरुअ़ किये, हज़रत उस्मान रज़ि0 ने कहा यह क्या करते हो? हज़रत मिक़दाद रज़ि0 ने कहा मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि जब तुम किसी आदमी को तारीफ करते देखो तो उसके मुँह में मिट्टी झोंक दो। (मुस्लिम)

और उन हदीसों में जिनमें कुछ तारीफें जायज़ हैं उसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कौल है कि आपने हजरत अबू बक्र रज़ि0 से फरमाया कि मुझे उम्मीद है कि तुम उन लोगों में से होगे जो जन्नत के हर दरवाज़े से बुलाये जायेंगे।

दूसरी हदीस में है कि तुम उनमें से नहीं हो जो पायजामे को शेखी से लटकाते हैं।

और हज़रत उमर रज़ि0 से फरमाया तुम को शैतान ने किसी रास्ते पर चलते देखा तो तुरन्त दूसरे रास्ते पर हो गया।

जिस शहर में महामारी फैली हो वहां से आने और वहां जाने की मुमानियतः–

अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है "तुम कहीं भी हो, मौत तुम को आ ही लेगी अगर्चि तुम मजबूत बुर्जों के अन्दर हो"

(सूरः निसाः 11)

दूसरी जगह इरशाद फरमायाः "और अपने हाथों हलाकत में न डालो"।

(सूरः बकराः 11)

हजरत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि0 ने मुल्के शाम की ओर प्रस्थान किया जब ''सर्ग'' नामी जगह में पहुंचे तो अमीरे लशकर हज़रत अबू उबैदा रज़ि0 अपने साथियों के स्वागत को आये और कहा कि मुल्के शाम में महामारी फैली हुई है, रावी कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि0 ने मुझ से कहा मुहाजिरीन अव्वलीन को बुलाओ, मैं बुला लाया हज़रत ने उनसे कहा शाम में महामारी फैली है, तुम्हारा क्या खयाल है, पलट जाऊँ या आगे बढ़ूँ? उनमें से कुछ लोगों ने राय दी कि आप अच्छे काम से आए हैं हमारी राय नहीं कि पलट जायें और कुछ ने कहा कि आप अकेले नहीं हैं, आपके साथ सहा–बए–किराम भी हैं, मेरी राय नहीं कि उनको वहां ले जायें, बेहतर है कि पलट जायें, हज़रत उमर रज़ि0 ने उनसे कहा आप तशरीफ़ ले जाइए और मुझ से कहा अंसार को बुला लाओ, मैं बुला लाया, हज़रत उमर रज़ि0 ने उनसे भी इसी किस्म की बात की और उन्होंने भी मुहाजिरीन की तरह मशवरा दिया, हज़रत उमर रज़ि0 ने उनको भी उठा दिया और मुझ से कहा कुरैश के उमर दराज मुहाजिरीन को जिन्होंने फत्हे मक्का के समय हिजरत की है बुला लाओ, मैं उनको भी बुला लाया, उनसे हजरत उमर ने मशवरा लिया तो दो आदमियों ने बिल्कुल इख्तिलाफ नहीं किया बल्कि यह कहा कि हमारी राय है कि आप सबको लेकर जरूर वापस हो जाइए, उनको महामारी में न ले जाइए, हज़रत ने यह सुन कर एलान करा दिया कि कल सुबह को मैं वापस हूंगा, तुम लोग भी तैयार रहो, हज़रत अबू उबैदा रज़ि0 ने कहा अमीरुल मोमिनीन आप तक़दीर से भाग कर जा रहे हैं, हज़रत ने कहा ऐ अबू उबैदा रज़ि0 काश यह बात तुम्हारे मुंह से न निकलती, और हज़रत उमर रज़ि0 हज़रत अबू उबैदा रज़ि0 के खिलाफ कुछ नहीं करते थे, कहने लगे हां हम अल्लाह की तकदीर से अल्लाह की तक़दीर ही की तरफ़ जा रहे हैं, तुम्हारे पास दो ऊँट हों और किसी मैदान में उतरें, जिसके एक तरफ़ हरयाली है और दूसरी तरफ सूखा तथा अकाल है तो तुम सूखे में चराओ गे तो भी अल्लाह की तकदीर से, और हरयाली मेंचराओगे तो भी अल्लाह की तकदीर से, इतने में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ आ गये, वह इस मशवरे में शरीक न थे, किसी ज़रूरत से कहीं गये हुए थे, उन्होंने सुन कर कहा मेरे पास इस का इल्म है मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि जिस जगह महामारी फैली हो वहां न जाओ अगर तुम्हारे शहर में आ गई हो तो वाहां से भागो भी नहीं, हज़रत उमर रज़ि0 ने यह सुन कर अल्लाह की तारीफ की और कूच कर दिया।

(बुखारी–मुस्लिम

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

ज़िक्रे नबीये पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

सारी तारीफें सिर्फ उस अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहानों का रब है, रहमान है, रहीम है, रोज़े जज़ा का मालिक है, ऐ अल्लाह! हम सब सिर्फ तेरी इबादत करते हैं और सिर्फ तुझ ही से मदद तलब करते हैं, ऐ अल्लाह! हम को सीधा रास्ता दिखा दे और उस पर चला दे, वह रास्ता कि जिस पर लोग चले तो आपने उनको तरह तरह के इनआ़म दिये, ऐसे बुरे लोगों का रास्ता नहीं कि जिस पर लोग चले तो उन पर तेरा ग़ज़ब हुआ, न ऐसों का रास्ता जो भटक गये, आमीन या रब्बल आलमीन।

अल्लाह ने कैसी मुफीद कारआमद ज़मीन बनाई जिस पर हम रहते बसते हैं, ऊपर नीले आसमान का साइबान तान दिया, उसके अन्दर सूरज चाँद तारे रोशन कर दिये, दिन काम करने और रोज़ी कमाने के लिए और रात को आराम करने के लिए बनाया, अपनी मख़्लूक़ में इन्सान को सबसे अफज़ल बनाया और इन्सानों में अपने प्यारे और आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ैरुल बशर बनाया, उन पर लाखों दुरूद हों और उन पर लाखों सलाम हों।

अल्लाह तआ़ला ने अपनी मख़लूक़ को सीधा रास्ता चलाने के लिए बहुत से नबियों और रसूलों को भेजा, हज़रत आदम अलै0, हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्माईल, हज़रत मूसा (अ0) और न जाने कितने पैग़म्बर भेजे, जिन की गिन्ती अल्लाह ही को मालूम है। हज़रत ईसा (अ0) आये तो यहूदियों ने उनकी बड़ी मुख़ालफत की यहां तक कि साज़िश करके अपनी समझ से उनको सलीब पर चढ़वा दिया लेकिन जिसे सलीब पर चढ़ाया गया वह ईसा अलैहिस्सलाम की शक्ल का कोई और था, ईसा अलै0 को अल्लाह तआ़ला ने ज़िन्दा आसमान पर उठा लिया जिसे यहूदी समझ न सके।

उसके बाद दुन्या में बड़ा फसाद फैला, ऐसा फसाद फैला कि इंसानीयत तिलमिला उठी जुआ, शराब, क़त्ल, ज़िना, सारे गुनाह खुल्लम—खुल्ला होने लगे, बच्चियाँ ज़िन्दा दफ्न की जाने लगीं, तो अल्लाह तआ़ला की रहमत जोश में आई और अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब और आख़िरी नबी को दुन्या में भेजा, अल्लाह तआला आप पर लाखों रहमतें नाज़िल फरमाये और आप पर लाखों सलाम हों।

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वालिदा का नाम बीबी आमिना था, और वालिद साहिब का नाम अब्दुल्लाह था, अल्लाह की मर्ज़ी और अल्लाह की मस्लहत आप अभी पैदा भी नहीं हुए थे कि वालिद साहिब अब्दुल्लाह का इन्तिक़ाल हो गया, जवान बेटे के इन्तिक़ाल पर आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब को बड़ा दुख हुआ, लेकिन हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से दादा अब्दुल मुत्तलिब को बेइन्तिहा ख़ुशी हुई। दादा ने पोते का नाम मुहम्मद रखा।

बीबी आमिना कितनी ख़ुशक़िस्मत थीं कि अल्लाह के आख़िरी और महबूब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की माँ होने का शरफ हासिल हुआ, जब हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके बतने मुबारक में थे तो हज़रत आमिना ने ऐसे अनवार व बरकात देखे कि उनको वह सोच भी न सकती थीं। न कोई तकलीफ, न कोई गिरानी, बहुत अच्छे–अच्छे ख़्वाब दिखाई देते, ख्वाब में फिरिश्ते आ कर आपको ख़ुशख़बरी देते, जिससे उनको अन्दाज़ा होता कि उनके शिकमे मुबारक में जो बच्चा पल रहा है वह कोई गैर मामूली बच्चा है। आपकी पैदाइश मशहूर कौल के मुताबिक फील वाले वाक़िआ के पचास रोज़ बाद 12 रबीउल अव्वल पीर के रोज सुब्हे सादिक़ के वक्त हुई। सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

मक्के का यह दस्तूर था कि यहां जो बच्चा पैदा होता, आस पास के गाँव से दूध पिलाने वाली औरतें आतीं, और बच्चों को ले जा कर अपना दूध पिलातीं, और जब बच्चे का दूध छूटता तो उनके वालिदैन को वापस कर जातीं, कभी दूध छुड़ाने के बाद भी अपने पास रखतीं, यहाँ तक कि बच्चा अपनी ज़रूरियात ख़ुद पूरी करने लगता तो वालिदैन के पास पहुंचा कर इनआ़म व इकराम लेतीं, इसी रवाज के मुताबिक़ आप को दाई हलीमा ले गयीं और आपकी बरकत देख कर हैरान रह गयीं, दूध छुड़ाने के बाद भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दाई हलीमा के सुपुर्द रहे, फिर अपनी माँ के पास आ गये, छह साल की उम्र में मोहतरम माँ का इन्तिक़ाल हो गया, दादा अब्दुल मुत्तलिब बड़े लाड व प्यार से पालते रहे, दस साल के हुए तो दादा जान भी इस दुन्या में न रहे, चचा अबूतालिब के साथ रहने लगे, आप की सेहत बहुत अच्छी थी, खूबसूरती में यक्ता थे, पच्चीस साल के हुए तो बीबी ख़दीजा जो एक रईस औरत थीं वह भी सूरत व सीरत में यक्ता थीं, उम्र चालीस साल थी, वह बेवा थीं, उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ईमानदारी और शराफत से मुतअस्सिर हो कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ुद पैग़ाम दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम ने क़बूल कर लिया और निकाह हो गया।

अल्लाह के इल्म में तो हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अज़ल ही से ख़ातिमुल अंबिया थे। लेकिन जब आप चालीस साल के हो गये तो आपको नुबुव्वत का काम सुपुर्द हुआ और आप पर कुर्आन नाज़िल होने का सिलसिला शुरु हुआ, आप ने कुरैश को बुला कर बताया कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही है, इस बात का इक़रार कर लो तो कामयाब हो जाओगे, और बताया कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ, ये ऐलान सुन कर नेक रूहों वाले तो ईमान लाने लगे और मुसलमान होने लगे, लेकिन बदबख़्त लोगों ने आपकी मुख़ालफत शुरु कर दी, यहां तक कि आप के हक़ीक़ी चचा अबू लहब भी आप के दुश्मन हो गये, अबूजहल भी आप का दुश्मन हो गया, लेकिन साथ ही बहुत अच्छे अच्छे लोग ईमान में दाख़िल होने लगे, सबसे पहले औरतों में हज़रत ख़दीजा रज़ि0 ईमान लाईं, मर्दों में हज़रत अबू बक्र, लड़कों में हज़रत अली, गुलामों में हज़रत ज़ैद ईमान लाये, फिर तो ईमान लाने वालों का एक सिलसिला चल पड़ा, हज़रत उस्मान और हज़रत उमर ईमान लाये, शैतान की तिलमिलाहट से मुख़ालफत भी बढ़ने लगी, यहां तक कि अल्लाह की पनाह हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल के मनसूबे बनाये गये, और एक रात आप का घर घेर लिया गया तो अल्लाह के हुक्म से आप हिज़रत करके मदीना जाने के लिए घर से निकल आये घर घेरने वालों को पता न चल सका यह आप का मुअ़जिज़ा था आप हज़रत अबू बक्र को साथ ले कर मदीने के लिए रवाना हो गये।

मक्के के कुरैश बुत परस्त थे, तौहीद की दावत पर हमारे हुजूर के मुख़ालिफ़ हो गये थे मगर हमारे हुजूर को अमानत दार समझते थे और कई लोगों की अमानतें हमारे हुजूर के पास रख रखी थीं, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने घर से निकलने से पहले हज़रत अली रज़ि0 से फरमाया हम मदीने जा रहे हैं तुम आराम से घर में रहो कुरैश तुम को कोई नुक़सान न पहुंचा सकेंगे, यह अमानतें जिन लोगों की हैं उन को पहुंचा कर तुम भी मदीने आ जाना।

हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के साथ रवाना हो कर रास्ते की मुशकिलात सहते हुए खैरियत के साथ मदीना तय्यिबा पहुँच गये मदीने वालों को हुजूर की

आमद की खबर हो चुकी थी वह बेचैनी से आपके आने का इन्तिज़ार कर रहे थे, मदीना पहुंचने पर मदीने वालों को बड़ी ख़ुशी हुई, मक्के के जो लोग ईमान ला चुके थे वह सब आगे पीछे मदीना पहुंच गये। दूसरी जगह भी जो लोग ईमान लाए थे मदीना पहुंच गये, मदीने के अक्सर लोग ईमान ला चुके थे उन लोगों ने आने वाले मुहाजिरीन की बड़ी मदद की इसी लिए वह अन्सार कहलाए।

मदीने में हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों की मदद से मस्जिद बनाई जो नबी की मस्जिद कहलाई, अब मुसलमान ताकत में आ चुके थे। और इस्लाम तेजी से फैल रहा था, मगर मक्के के कुरैश की दुशमनी भी बढ़ रही थी उन्होंने मुसलमानों को नुक्सान पहुंचाने और इस्लाम को मिटाने की गरज़ से मदीने पर कई हमले किये पहले हमले में बद्र के मैदान में मुक़ाबला हुआ जिस में कुरैश के बड़े बड़े सोरमा मारे गये, दूसरे हमले में उहुद की लड़ाई हुई जिस में कुछ मुसलमानों की चूक से सत्तर सहाबा शहीद हो गये। इसी लड़ाई में हमारे हुजूर के प्यारे चचा हमज़ा शहीद हुए हमारे हुजूर ने उनको सय्यिदुश्शुहदा का ख़िताब दिया तीसरा हमला ख़न्दक़ की लड़ाई कहलाता है इस लड़ाई में कुरैश ने बड़ा मजमा इकट्ठा कर रखा था लेकिन अल्लाह ने ऐसा तूफान भेजा कि उनके हवास उड़ गये और उन को नाकाम भागना पड़ा यह अल्लाह की खुली हुई मदद थी, इस्लाम फैलता रहा।

अल्लाह के फ़ज़्ल से एक दिन वह भी आया कि हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दस हज़ार सहाबा के साथ मक्का मुकर्रमा में फातिहाना दाख़िल हुए मक्के वालों को मुक़ाबले की हिम्मत न हुई बल्कि वह सब के सब मुसलमान हो गये, हमारे हुज़ूर तो खुल्क़े अज़ीम पर थे आपने मक्के के उन तमाम लोगों को मुआफ़ कर दिया जिन्होंने हमारे हुजूर को तरह तरह से सताया था, प्यारे चचा हज़रत हमज़ा को क़त्ल कराने वाली हिन्दा और क़त्ल करने वाले वहशी को भी मुआफ़ कर दिया और उनको सहाबीयत का दर्जा मिल गया। अब हमारे हुजूर ने सहाबा की मदद से काबा जो मुलसमानों का क़िब्ला बन चुका था मगर उसमें 360 बुत रखे हुए थे। उन बुतों से काबे को पाक किया।

अब मक्का भी इस्लाम का मरकज़ था और मदीना भी, मक्के में हुजूर का घर था यहीं पैदा भी हुए थे और अब मक्का फत्ह हो चुका था मगर हुजूर ने अन्सार से वादा किया था कि वह मदीना न छोड़ेंगे इसलिए मक्के में रिहाइश न इख़्तियार करके मदीने ही में रिहाईश इख़्तियार की। सन दस हिजरी में हमारे हुजूर ने सहाबा के बहुत बड़े मजमें के साथ हज किया, कुर्आन पाक उतरते हुए 23वाँ साल था। जब कुर्आन पाक पूरा उतर चुका और दीने इस्लाम मुकम्मल हो गया तो 12 रबीउलअव्वल दोशंबे के रोज़ अल्लाह ने हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुला लिया, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन सहा–बए– किराम को बड़ा दुख हुआ, ऐसा दुख कि उसकी बराबरी किसी दुख से नहीं की जा सकती, मगर सहाबा ने उस दुख को बरदाश्त किया और इस्लाम पर जमे रहे यही नही कि खुद इस्लाम पर जमे रहे बल्कि इस्लाम फैलाते रहे हमारा फर्ज़ है कि हम भी इस्लाम पर जमे रहें, और जो लोग इस्लाम से नावाक़िफ़ हैं उन को वाक़िफ़ कराते रहें और इस्लाम की दावत देते रहें।

हम नमाज़ में कोताही न करें, मर्द सब कोशिश करके पांचों वक़्त की नमाज़ मस्जिद में जमाअ़त से अदा करें, औरतें अपनी नमाज़ें घरों में अदा करें किसी को नमाज़ में कोताही करते देखें तो हम हिक्मत से समझाएं और उसे नमाज़ी बनाएं।

रमज़ान के रोज़ों में कोताही न करें, अल्लाह ने माल दिया हो तो सालाना उसकी ज़कात निकालें ईदुल फ़ित्र में सद–कए–फ़ित्र अदा करें, ईदुल अज़हा में कुर्बानी करें, अल्लाह ने वुस्अत दी हो तो कम से कम ज़िन्दगी में एक बार हज करें।

झूट, ग़ीबत, रिश्वत खोरी, सूद खोरी, शराब नोशी, ख़यानत, चोरी, डकैती, ज़िना जैसे गुनाहों से दूर रहें, मुसलमान औरतें शरई परदे का एहतिमाम करें, मर्द नामहरम औरतों से दोस्ती न करें, किसी की बहन बेटी पर बुरी नज़र न डालें, नौकरी, मज़दूरी, कारोबार में इस्लामी नमूना पेश करें अपने अच्छे अख़लाक़ से वतनी भाइयों के दिल जीतने की कोशि करें, अल्लाह को हर वक़्त याद रखें। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर खूब दुरूद व सलाम पढ़ा करें और यह हदीस हमेशा सामने रखें "जिसने मेरी सुन्नत से मुँह मोड़ा मेरे तरीक़े से मुँह मोड़ा वह मुझ से नहीं यानी उसका मुझ से कोई रिश्ता नहीं" अल्ला हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिंव व अ़ला आलिही व अस्हाबिहि व बारिक व सल्लिम।

❖❖❖

मन्ज़ूम दुरूदो सलाम

—माहिरुल क़ादिरी— प्रस्तुतिः मु0 गुफ़रान नदवी

सलाम उस पर कि जिसने बे कसों की दस्तगीरी की
सलाम उस पर कि जिसने बादशाही में फ़क़ीरी की
सलाम उस पर कि असरारे महब्बत जिसने समझाये
सलाम उस पर कि जिसने ज़ख़्म खाकर फूल बरसाये
सलाम उस पर कि जिसने ख़ूँ के प्यासों को क़बाएं दीं
सलाम उस पर कि जिसने गालियां सुन कर दुआएं दीं
सलाम उस पर कि जिसका ज़िक्र है सारे सहाएफ़ में
सलाम उस पर हुआ मजरूह जो बाज़ारे ताएफ़ में
सलाम उस पर वतन के लोग जिसको तंग करते थे
सलाम उस पर कि घर वाले भी जिससे जंग करते थे
सलाम उस पर कि जिसके घर में चाँदी थी न सोना था
सलाम उस पर कि टूटा बोरिया जिस का बिछौना था
सलाम उस पर जो सच्चाई की ख़ातिर दुख उठाता था
सलाम उस पर जो भूका रह के औरों को खिलाता था
सलाम उस पर जो उम्मत के लिए रातों को रोता था
सलाम उस पर जो फ़रशे ख़ाक पर जाड़ों में सोता था
सलाम उस पर कि जिसने झोलियां भर दीं फ़क़ीरों की
सलाम उस पर कि मुश्कें खोल दीं जिसने असीरों की
सलाम उस पर कि जिसकी चाँद तारों ने गवाही दी
सलाम उस पर कि जिसकी संग पारों ने गवाही दी
सलाम उस पर कि जिसने चाँद के दो टुकड़े फ़रमाया
सलाम उस पर कि जिसके हुक्म से सूरज पलट आया
सलाम उस पर फ़ज़ा जिसने ज़माने की बदल डाली
सलाम उस पर कि जिसने कुफ़्र की क़ूवत कुचल डाली
सलाम उस पर शिकस्तें जिसने दीं बातिल की फ़ौजों को
सलाम उस पर कि साकिन कर दिया तूफ़ान की मौजों को

सलाम उस पर कि जिसने काफ़िरों के ज़ोर को तोड़ा
सलाम उस पर कि जिस ने पनजए बेदाद को तोड़ा
सलाम उस पर सर शाहंशाही जिसने झुकाया था
सलाम उस पर कि जिसने कुफ्र को नीचा दिखाया था
सलाम उस पर कि जिसने ज़िन्दगी का राज़ समझाया
सलाम उस पर कि जो खुद बद्र के मैदान में आया
सलाम उस पर भुला सकते नहीं जिसका कभी एहसां
सलाम उस पर मुसलमानों को दी तलवार और कुरआन
सलाम उस पर कि जिसके नाम लेवा हर ज़माने में
बढ़ा देते हैं टुकड़ा सरफ़रोशी के फ़साने में
सलाम उस पर कि जिसके नाम की अज़मत पे कटमरना
मुसलमां का यही ईमां, यही मक़सद यही शैवा
सलाम उस ज़ात पर जिसके परेशां हाल दीवाने
सुना करते हैं अब भी ख़ालिदो हैदर के अफ़साने
दुरूद उस पर कि जिसका नाम तसकीने दिले जां है
दुरूद उस पर कि जिसके खुल्क़ की तफ़सीर कुरआं है
दुरूद उस पर कि जिसकी बज़्म में किस्मत नहीं सोती
दुरूद उस पर कि जिसके ज़िक्र से सेरी नहीं होती
दुरूद उस पर तबस्सुम जिसका गुल के मुस्कराने में
दुरूद उस पर कि जिसका फ़ैज़ है सारे ज़माने में
दुरूद उस पर कि जिसका नाम लेकर फूल खिलते हैं
दुरूद उस पर कि जिसके फ़ैज़ से दो दोस्त मिलते हैं
दुरूद उस पर जिस का तज़किरह ऐने इबादत था
दुरूद उस पर कि जिसकी ज़िन्दगी रहमत ही रहमत है
दुरूद उस पर कि जो था सद्रे महफ़िल पाक बाजों में
दुरूद उस पर कि जिसका नाम लेते हैं नमाज़ों में
दुरूद उस पर मकीने गुम्बदे ख़ज़रा जिसे कहये
दुरूद उस पर शबे मेराज का दूल्हा जिसे कहये
दुरूद उस पर बहारे गुलशने आलम जिसे कहये
दुरूद उस ज़ात पर फ़ख़्रे बनी आदम जिसे कहये

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

रिसालत (दूतता)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत (आज्ञापालन) व महब्बत में क़ौम का कल्याण हैः–

कुर्आन का यह ऐलान गुनहगार बन्दों के हक में खुदा के रहीम व करीम (कृपालू व दानशील) होने के साथ उनका सच्चा कद्रदां होने की तरफ इशारा करता है–

अनुवादः– *(ऐ नबी) कह दीजिए ''ऐ मेरे वह बन्दो! जिन्होंने अपने आप पर जियादती की, अल्लाह की रहमत (कृपा) से मायूस (निराश)न हों, अल्लाह सभी गुनाहों को माफ़ कर देता है। वह बड़ा क्षमादाता, कृपालू है।'' (सूरः अज़्ज़ुमर–53)*

एक दूसरी आयत में कहा गया–

अनुवाद– *और अपने रब (पालनहार) की माफ़ी और उस जन्नत (स्वर्ग) की ओर दौड़ो, जिसका फैलाव सारे आसमान और ज़मीन जैसा है, जो डरने वालों के लिए तैयार की गई है। जो खुशहाली और तंगी हर हाल में खर्च करते हैं, और गुस्से को रोकते हैं और लोगों को माफ़ करते हैं, और अल्लाह नेक लोगों को पसंद करता है। और यह कि जब वे कोई खुला गुनाह या अपने आप पर जुल्म कर लेते हैं तो अल्लाह को याद करते हैं और वे अपने गुनाहों की माफ़ी मांगते हैं, और अल्लाह के अलावा कौन है जो गुनाहों को माफ़ कर सके, और जानते बूझते वे अपने किये पर अड़े नहीं रहते, उनका बदला उनके रब की ओर से मग़्फ़िरत (क्षमादान) है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे और क्या ही अच्छा बदला है (अच्छे) अमल करने वालों को।*

(सूरः आले इमरान 133–136)

इससे भी आगे बढ़ कर सूरः तौबा में कहा गया–

अनुवाद– *तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द (प्रशंसा) करने वाले, रोजा रखने वाले (निःसंबंध) रुकूअ़ करने वाले, सज्दा करने वाले भलाई का हुक्म करने वाले, और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की सीमाओं की रक्षा करने वाले (यही मोमिन लोग हैं) ईमान वालों को जन्नत की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।*

(सूरः अत्तौबा–112)

इस प्रतिष्ठा की एक रौशन मिसाल यह है कि जब कुर्आन की ज़बान से उन तीन सहाबियों की तौबा की स्वीकार्यता का ऐलान किया गया तो गज़्व–ए–तबूक के नाजुक मौक़े पर (जिसमें सम्मिलित होना अत्यावश्यक था) बिना किसी उचित कारण के मदीना में रह कर बड़ी कोताही की थी, तो उनका उल्लेख करने से पहले खुद पैगम्बर और उन मुहाजिरीन

(शरणार्थियों) व अन्सार (सहायकों) का उल्लेख किया गया जिनसे इस मौक़े पर कोई कोताही नहीं हुई थी ताकि इन तीन पीछे रह जाने वालों को अपने अकेले और पसमान्दा (पिछड़ा) होने का एहसास न हो, और यह कि इन पर कोई उंगुली न उठा सके। और इन पर और क़यामत तक कुर्आन के पढ़ने वालों पर यह बात साफ़ हो जाये कि इनकी असल जगह और असल गिरोह यही सच्चे लोग, अन्सार व मुहाजिरीन के प्रथम पंक्ति के लोग हैं। सूरः तौबाः में कहा गया है–

अनुवादः– *बेशक अल्लाह नबी पर मेहरबान हो गया और मुहाजिरों और अन्सार पर भी, बावजूद इस के कि उनमें से एक गिरोह के दिल फिर जाने को थे (अर्थात–कुटिलता की ओर झुक गये थे) मुश्किल की घड़ी में पैग़म्बर के साथ रहे, फिर खुदा ने उन पर रहमत की नज़र डाली। बेशक वह उनके हक़ में बड़ा शफ़ीक़ (करूणामय), रहम वाला है। और उन तीनों पर भी जिनका मामला मुलतवी किया गया था, यहां तक कि जब धरती विस्तृत होते हुए भी उन पर तंग हो गई और उनकी जान उन पर भारी हो गई और उन्होंने जान लिया कि अल्लाह से बचने के लिए उसके सिवा कहीं पनाह (शरण) नहीं मिल सकती, फिर खुदा ने उन पर रहम किया ताकि वे पलट आएं, बेशक अल्लाह ही तौबा कबूल करने वाला रहम वाला है।*

(सूरः अत्तौबा 117–118)

इसके अलावा एक नियम के तौर पर इसका ऐलान किया कि अल्लाह की रहमत (कृपा) हर चीज़ पर हावी है और ग़ज़ब गुस्सा व जलाल पर गालिब हैः–

अनुवादः–*मेरी रहमत हर चीज़ पर छाई हुई है।*

(सूरः अल–अअ़राफ 156)

हदीसे कुदसी में है, मेरी दया मेरे क्रोध से बढ़ कर है।

कुर्आन ने निराशा को भी कुफ्र और जिहालत का पर्याय करार दिया है। एक जगह एक पैगम्बर (हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम) की ज़बान से कहलवाया गया–

अनुवादः–*अल्लाह की रहमत से तो काफ़िर ही मायूस होते हैं।*

(सूरः यूसुफ–78)

दूसरी जगह एक दूसरे पैग़म्बर (हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम) का कथन नकल किया गया–

अनुवादः– *अपने 'रब' की रहमत (कृपा) से पथ भ्रष्टों के अतिरिक्त निराश कौन हो सकता है?*

(सूरः हिज्र 56)

इस प्रकार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तौबा की फज़ीलत (प्रतिष्ठा) और खुदा की रहमत (कृपा) की विशालता का ऐलान करके डरी और सहमी इन्सानियत को, जो यहूदियों व ईसाईयों की देन थी, नई ज़िन्दगी का पैगाम दिया। उसके निराश और दुखे दिल में जान डाली, उसे तसल्ली दी और उसे धूल ग्रसित दशा से उठा कर मान–सम्मान और आत्मविश्वास का वरदान दिया।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाँचवा महान अविस्मर्णीय उपकार तथा अमूल्य उपहार दीन व दुन्या की वहदत (एकता) की परिकल्पना और यह क्रान्तिकारी सीख है कि इन्सान के कर्म व आचरण और उनसे पैदा होने वाले परिणामों की निर्भरता इन्सान की मानसिक दशा, कर्म के कारकों और उसके उद्देश्य पर है जिसको शरीअत की ज़बान में ''नीयत'' कहते हैं। उसके नज़दीक न कोई चीज़ ''दुन्या'' है और न कोई चीज़ ''दीन'' उसके नज़दीक खुदा की रजा की चाहत, निष्ठा और उसके आज्ञापालन की भावना व इरादों से बड़े से बड़ा दुन्यावी कार्य, यहां तक कि हुकूमत, जंग, आनन्द, भोग, मेहनत–मजदूरी, जायज़ तफ़रीह का साधन, दाम्पत्य जीवन, सब उच्च कोटि की इबादत व आराधना, अल्लाह (ईश्वर के सानिध्य का साधन, विलायत (परम भक्ति) तक पहुँचने का माध्यम और दीन बन जाते हैं। इसके विपरीत बड़ी से बड़ी इबादत और दीनी काम जो ख़ुदा की प्रसन्नता से ख़ाली हो, ख़ालिस दुन्या और ऐसा कर्म गिना जायेगा जिस पर कोई सवाब (पुण्य) और बदला नहीं है।

जारी.....

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा .....

करते हैं ''लउ नशा–उ लकुलना मिस्ल हाज़ा'' हम चाहें तो हम भी ऐसी बात कह दें, उतार लाएं आदि, उनकी सज़ा का भी आगे उल्लेख है।

5. वह प्रथम हमारे हवाले होता है माँ के पेट में फिर आ कर ठहरता है दुन्या में फिर हवाले होगा कब्र में फिर जा ठहरेगा जन्नत (स्वर्ग) या दोज़ख (नर्क) में।

6. वनस्पति विज्ञान के ज्ञान से यह बात साफ़ हो चुकी है जब पौधों पर पानी पड़ता है तो उसमें एक हरे रंग का पदार्थ पैदा होता है जिसे अंग्रेज़ी में क्लोरोफ़िल कहते हैं यही वह पदार्थ है जिसके द्वारा वनस्पति में दाने व फल पैदा होते हैं।

7. यह सब अल्लाह की शक्ति की निशानियां हैं पवित्र कुर्आन लोगों को बार बार इनमें विचार करने का निमंत्रण देता है।

8. मुरिश्कों की एक बड़ी संख्या जिनों से सहायता प्राप्त करती थी और उनको खुदाई में शरीक समझती थी और यूँ भी गुमराही शैतान के गुमराह करने से होती है इसलिए भी मानों अल्लाह के अलावा की उपासना उसी की उपासना है।

9. यहूदियों ने हज़रत मूसा को ईसाईयों ने हज़रत मसीह को खुदा का बेटा और मुश्रिकों (बहुदेववादियों) ने फरिश्तों को खुदा की बेटियाँ क़रार दे रखा था।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी रह0 —अनुवादः अतहर हुसैन

उ़मर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ रह0

युद्ध काल में भी रक्षाः–

युद्ध में परिस्थिति बहुत ही जटिल हो जाती है। इस अवसर पर हुकूमतें कड़ी से कड़ी कार्यवाही करती हैं। परन्तु मुसलमानों का सेवा–भाव तथा वचन–पालन, उन्हें ऐसी जटिल तथा आशंकापूर्ण परिस्थितियों में भी किसी अनुचित व्यवहार की आज्ञा नहीं देता। यर्मूक का युद्ध, शाम की लड़ाइयों में बहुत ही महत्व का है। रूमी साम्राज्य अपनी पूरी शक्ति को एकत्र कर मुसलमानों के मुक़ाबले में डट गया था। लाखों सेनाएं मुसलमानों का तहस–नहस करने के लिए युद्ध भूमि में इकट्ठा हो रही थीं और यह क्रम बराबर जारी था। मुसलमानों की संख्या बहुत कम थी और वह भी विभिन्न नगरों में बंटी हुई थी। सेनापति हज़रत अबू उबैदा ने परामर्श हेतु सरदारों को एकत्र किया। कुछ लोगों की राय हुई कि स्त्रियों तथा बालकों को नगर में छोड़ कर, मुसलमान बाहर निकल जायें और रूमियों से डट कर मुक़ाबला करें। परन्तु इसमें कठिनाई यह थी कि ऐसी दशा में इस बात का ख़तरा था कि कहीं रूमी ईसाई फ़ौजों के प्रभाव से उस नगर की ईसाई जनता विद्रोही न बन जाय और मुसलमान औरतें तथा बच्चे आपत्ति में पड़ जायें। अतः कुछ सरदारों ने इस ख़तरे की ओर ध्यान भी दिलाया। यह सुन कर हज़रत अबू उबैदा ने कहा कि यदि ऐसा विचार है तो फिर यह किया जाये कि ईसाइयों को नगर से बाहर कर दिया जाये, किन्तु एक दूसरे सरदार हज़रत शूरहबील इब्न हसन ने फ़ौरन टोका कि यह आप क्या कर रहे हैं। ईसाई जनता को हम नगर से निष्कासित किस तरह कर सकते हैं जब कि उन्हें हम शरण दे चुके हैं। यह सुन कर हज़रत अबू उबैदा सचेत हो गए और उन्होंने अपना दोष स्वीकार किया।

एक अनुपम घटनाः–

इस अवसर पर मुसलमानों ने एक और ऐसा आश्चर्यजनक कार्य किया जिसके उदाहरण से विश्व का इतिहास रिक्त है। हज़रत अबू उबैदा रज़ि0 ने कोषाध्यक्ष से कहा कि हमने ईसाईयों से जो धन जिज़या (कर) के रूप में वसूल किया था वह उनकी रक्षा हेतु लिया था अब ऐसी जटिल परिस्थित में इस सेवा का पालन करना कठिन है। शत्रु हमें चारों ओर से घेरे हुए हैं, इस समय हमें अपनी ही रक्षा

करना कठिन है तो फिर इस अवस्था में हम उनकी रक्षा कैसे कर सकते हैं। अतः वह धन उन्हें वापस कर दिया जाये। इस आज्ञा का तुरन्त पालन किया गया और इस तरह देखते ही देखते वसूल किया हुआ लाखों रूपया शत्रुओं के सह–धर्मियों के पास पहुंच गया। युद्ध–काल में यह बड़े ख़तरे की बात थी। लाखों का धन मुसलमानों के ख़ज़ाने से निकल जाये। और निकल कर कहां जाये? उन लोगों के पास जो शत्रुओं से धार्मिक, सांस्कृतिक नातों तथा सह–भाषी होने के विचार से निकटस्थ सम्बन्ध रखते थे और इसकी भी सम्भावना थी कि सुगमता पूर्वक वह शत्रुओं से मिल जायें और शारीरिक बल के साथ इस धन को भी मुसलमानों को क्षति पहुंचाने के लिए व्यय करें। पूर्णतया लौकिक दृष्टि से देखने वाला व्यक्ति इस अवसर पर कदापि इसका साहस नहीं कर सकता था कि इतनी बड़ी राशि यूं हाथ से निकल जाय और ऐसे लोगों के हाथ में पहुंच जाय जो दुशमनों से बहुत निकट हों। परन्तु मुसलमानों ने इन शंकाओं की चिन्ता न की। उनका दृष्टिकोंण तो यह था कि विजय तथा पराजय उस सर्वशक्तिमान ईश्वर के हाथ में है जो चाहे तो एक तुच्छ चींटी को बल प्रदान कर दे और लाखों के विराट जनसमूह को एक इशारे में मैदान छोड़ने पर विवश कर दे, उन्होंने कहा, मामला खुदा के इख़्तियार में है। हमें जीतने या हारने के दृष्टिकोण से कर्म–मार्ग का निर्णय न करना चाहिए, बल्कि यह देखना चाहिए कि परिस्थितियों में ईश्वर की क्या इच्छा है और ख़ुदा तथा उसके रसूल ने हमें क्या आदेश दिया है।

अब मामला बिल्कुल साफ था। ज़िम्मियों से जिज़या की वसूली के साथ मुसलमानों पर उनकी सुरक्षा की भी पूरी ज़िम्मेदारी थी और चूंकि रूमियों के प्रचण्ड आक्रमण काल में उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध नहीं किया जा सकता था इसलिए वसूल किया हुआ जिज़या का धन वापस कर देना चाहिए था उन लोगों को बुला कर सारी रक़म उनके हवाले कर दी गई और कह दिया गया कि हमने तुम्हारी रक्षा हेतु यह धन तुम से जिज़या के रूप में लिया था और अब चूंकि इस उत्तरदायित्व को सँभालना हमारे लिए कठिन है, अतएव तुम्हारा धन तुम्हें वापस किया जा रहा है।

मुसलमानों के इस व्यवहार ने ईसाई तथा यहूदी जनता को विस्मित कर दिया। उन्होंने कहा, मुसलमान भी कैसे सज्जन तथा धर्मात्मा पुरुष हैं। भला रूमी शासक होते तो वह इस अवसर पर ऐसी ईमानदारी का व्यवहार कर सकते थे?

वह तो इस समय विचार कर के कि मालूम नहीं इस युद्ध का क्या परिणाम हो और ईश्वर जाने अब हमें पुनः इस इलाक़े में लूटने का अवसर प्राप्त हो या न हो, अतः इस समय और दिल खोल कर लूटने लगते और भरसक प्रयत्न करते कि लूट खसोट तथा छीन–झपट कर जो भी हाथ लग जाये ग़नीमत है। लेकिन मुसलमान तो धर्म तथा मत, सभ्यता तथा संस्कृति, भाषा तथा साहित्य और वंश तथा गोत्र के विचार से पूर्णतया भिन्न है, तो भी वह आज हमारे साथ यह व्यवहार कर रहे हैं कि अपनी वसूल की हुई रक़म भी ख़ज़ाने से निकाल कर हमारे हवाले कर रहे हैं। यह सोच कर वह प्रभावित हुए और कहने लगे, ''हम रूमियों के शासनकाल में अनेक प्रकार के कष्टों तथा अत्याचारों में ग्रस्त थे, ईश्वर ने तुम्हें करुणा, दया तथा शान्ति का दूत बना कर हमारे पास भेजा, तुमने हमें शताब्दियों के अन्याय तथा अत्याचारों से मुक्ति दिलाई। तुम्हारा आचार–व्यवहार तथा शासन–प्रबन्ध हमें रूमियों से कहीं पसन्द है''। वह मुसलमानों के प्रस्थान पर फूट–फूट कर रो रहे थे और कह रहे थे, कि ईश्वर तुम लोगों को फिर वापस लाये। हम अपने नगरों पर फिर कभी कैसर का अधिकार तथा आधिपत्य न होने देंगे। हम तुम्हारी ओर से नगर की रक्षा करेंगे और रूमी सेना को कदापि न घुसने देंगे। यहूदियों ने तौरात की सौगन्ध खा कर कहा, जब तक हमारे दम में दम है, हिरक्ल (रूम का सम्राट) का हाकिम अब इस नगर में क़दम न रखने पायेगा। उन्होंने नगर के फाटक बन्द कर लिए और सतर्कता पूर्वक उसकी रक्षा का प्रबन्ध किया।

यह केवल एक ही नगर हिम्स की घटना नहीं है बल्कि उस समय मुसलमानों के अधीन जितने भी शामी नगर थे उन सब की यही दशा थी। प्रजा के साथ सद्व्यवहार का ही परिणाम था कि जनता के हृदय श्रद्धा तथा प्रेम से परिपूर्ण थे और वह तन, मन, धन से मुसलमानों के ऐसे आज्ञाकारी तथा उनके लिए प्राणों की बाज़ी लगाने वाले बन गये थे कि जिस का उदाहरण विश्व के इतिहास में मिलना कठिन है। पैग़म्बर–ए–इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा उनके सच्चे उत्तराधिकारियों ने जगत वासियों के सम्मुख सैय्यदुल –क़ौमि–ख़ादिमुहुम (राष्ट्र का हाकिम उसका सेवक होता है) का ऐसा स्पष्ट तथा उज्जवल आदर्श प्रस्तुत किया जो मानव जाति के लिए सदैव प्रकाश सतम्भ का काम देगा।

❖❖❖

जारी.....

अल्लाह की मदद की कुंजी और सफलता का हथियार
(सब्र और सलात)

—मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

तूफान इस लिए आते हैं कि अपनी आपत्तियों द्वारा तबाही मचाते हुए गुज़र जाएं, समुद्र में तूफानी मौज़ें (तरंगें) इसलिए उठती हैं कि साहिल को रौंद कर वापस चली जाएं, आतिश फिशाँ (ज्वाला मुखी) इसलिए फूटते हैं कि ज़मीन के सीने में जो लावे छुपे हुए हैं वह बाहर आ कर जम जाएं, तुफानों और ज्वाला मुखी लावों की विनाशकारियाँ इतनी तीव्र होती हैं कि लगता है कि अब संसार में कुछ बचेगा ही नहीं, लेकिन वह स्थायी नहीं होती, सामेयिक होती हैं, मानव जाति की व्यक्तिगत तथा सामूहिक जीवन में भी इसी प्रकार के तूफान आते हैं कि जिससे मानव हृदय काँपने तथा डगमगाने लगते हैं, परन्तु मनुष्य के लिए यह परीक्षा के पल होते हैं, अगर मनुष्य इस परीक्षा में साहस न छोड़े अपितु धैर्य के साथ जमा रहे, भावनाओं से प्रभावित न हो और क्रिया तथा प्रतिक्रिया में ग्रस्त हो कर कोई बुद्धि रहित प्रक्रिया न कर बैठे तो यही आपत्ति उस के लिए आनन्द की भूमिका सिद्ध होगी और उस को सफलता से दोचार करेगी।

मोमिन को पवित्र कुर्आन ने ऐसी परिस्थितियों में दो बातों से मदद लेने का आदेश दिया है, सब्र (धैर्य) तथा सलात (नमाज़), सब्र क्या है? साधारणता लोग समझते हैं कि निकटी की मौत पर रोने धोने से बचना ''सब्र'' (धैर्य) है परन्तु सब्र (धैर्य) का क्षेत्र बड़ा विस्तृत है और उस का संबन्ध जीवन के तमाम भागों से है, सब्र का अर्थ है सहन करना सहन की शक्ति बड़ी ऊर्जा है तथा इस शक्ति से वंचित होना बहुत बड़ा विकार है, जिस मनुष्य में सहन की शक्ति होती है, उसमें उपाय सोचने की क्षमता होती है और वह विरोधी षडयंत्रों से निमट सकता है, अंबिया अलै0 को चूंकि सबसे अधिक विरोधी परिस्थितियों से गुज़रना पड़ता है, इस लिए उनमें अल्लाह तआला की ओर से सहनशीलता तथा धैर्य की शक्ति अत्याधिक प्रदान होती है।

मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि मनुष्य साहस रहित तथा डरपोक बन जाए अपितु तात्पर्य यह है कि कूटनीति तथा उपाय रहित न हो जाना चाहिए तथा अपनी भावनाओं पर कन्ट्रोल रखना चाहिए और नासमझी का काम न कर बैठना चाहिए, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम की जीवनी में पग पग पर इस के उदाहरण मिलते हैं हुदैबिया सन्धि के अवसर पर मक्के के एक जत्थे ने मुसलमानों पर आक्रमण कर दिया, उस जत्थे में लगभग चालीस लोग थे प्रत्यक्ष है कि इन लोगों ने मुसलमानों को जान से मारने की गरज से आक्रमण किया था। अतः उनकी सज़ा यह थी कि उनको जान से मारा जाता या कम से कम उनको बन्दी बना लिया जाता, परन्तु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको क्षमा कर के छोड़ दिया, अगर ऐसा न किया जाता तो युद्ध छिड़ जाता और उससे जानी या माली हानि चाहे जिस ओर होती परन्तु मक्के वालों में इस्लाम से घृणा पैदा हो जाती। मक्के वाले हरम का बड़ा आदर करते थे वह समझते कि मुसलमान हरम का निरादर करना चाहते हैं, यह भावनाओं पर नियंत्रण रखने का एक अद्भुत उदाहरण है।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 की एक लड़ाई ''गज़–वए–बनू मुस्तलक़'' के नाम से जानी जाती है, इस लड़ाई में एक अंसारी और हज़रत उमर रज़ि0 के गुलाम के बीच कुछ तल्ख बातें हो गईं और अंसारी ने अपनी मदद के लिए अंसार को और हज़रत उमर के गुलाम ने अपनी मदद के लिए मुहाजिरीन को आवाज़ दी और इस प्रकार दो आदमियों का झगड़ा दो गुरोहों का झगड़ा बन गया। अब्दुल्लाह बिन उबई जो निफ़ाक़ के रोग में ग्रस्त था, अपितु मुनाफिकीन के गुरोह का नेतृत्व करता था और किसी ऐसे अवसर को हाथ से जाने न देता था जिससे इस्लाम को और मुसलमानों को हानि पहुंचे, उसने इस अवसर को गनीमत जाना और अंसार को यह कह कर उभारा कि मुहाजिरीन के विषय में तुम्हारी उपमा अरबों के इस कहावत की सी है कि अपने कुत्ते को खिला पिला कर मोटा करो कि वह तुम्हे ही काट खाये। अब्दुल्लाह बिन उबई की इस दुष्टता (शरारत) की सूचना एक छोटी आयु के अंसारी ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दी, जब आपने अब्दुल्लाह बिन उबई को बुला कर पूछा तो वह साफ मुकर गया। कुछ दूसरे अंसारी सहाबा जो अब्दुल्लाह बिन उबई के निफाक़ से परिचित नहीं थे उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उबई का सहयोग किया इस अवसर पर पवित्र कुर्आन में उन छोटी आयु के अंसारी की सूचना के सत्यापन में सूरे मुनाफ़िकून की आयतें उतरीं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने प्यार के साथ उनको डाँटते हुए कहा कि

अल्लाह तआला ने इस की बात का सत्यापन किया है।

हज़रत उमर रज़ि0 पर हक़ का जोश (सत्य की उत्तेजना) गालिब रहता था, उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इजाज़त मांगी कि अब्दुल्लाह बिन उबई की गरदन मार दी जाए, अगर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस की इजाज़त दे देते तो यक़ीनन यह बजा होता कि ''फितना क़त्ल से ज़ियादा सख़्त है'' (उपद्रव वध से अधिक कठिन है) लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस की इजाज़त न दी, कि अगर मैं ऐसा करूँ तो अंसार को गलत फहमी (भ्रम) पैदा हो सकती है और लोग सोचेंगे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं अपने साथियों को क़त्ल करा रहे हैं। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खामोशी इख्तियार फरमाई और सहाबा को चलने का आदेश दिया, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस पूरे दिन रात और अगले दिन दोपहर तक खिलाफ़े मामूल (असामान्य) चलते रहे। यहां तक कि सहाबा थक कर चूर हो गए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पड़ाव करने का आदेश दिया, इस लगातार सफर का उद्देश्य यह था कि लोग इतना थक जाएं कि अंसार और मुहाजिरीन के बीच जो तल्खी (कड़ुवाहट) पैदा हो गई थी उसको लोग भूल जाएं, फिर वह समय आया कि अब्दुल्लाह बिन उबै के पुत्र हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए, यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अत्यंत प्रिय सहाबी थे उन्होंने निवेदन किया कि मैं अपने वालिद के निफाक़ से परिचित हूं यदि आप की अनुमति हो तो मैं स्वयं उनको क़त्ल कर सकता हूँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इससे रोक दिया और फरमाया जब तक कोई अपने को मुसलमान जाहिर करेगा मैं उसके साथ मुसलमानों जैसा व्यवहार करूँगा, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ि0 को समझाया कि अगर हम उस वक़्त अब्दुल्लाह बिन उबै के क़त्ल की अनुमति दे देते तो कुछ सच्चे मुसलमानों को भी भ्रम हो सकता था, परन्तु अब यह परिस्थिति है कि उनके पुत्र स्वयं उनकी गरदन मारने को तैयार हैं, हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा अल्लाह तआला ने अपने रसूल की राय में बरकत रखी है।

यह हिकमत व मसलहत (बुद्धिमानी तथा हिति) और जोश पर होश को गालिब रखने की बातें हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम की जीवनी में इसके कितने उदाहरण मिलते हैं।

विद्यमान परिस्थिति में मुसलमानों के लिए अनिवार्य है कि वह इस परिस्थिति को समझें अगर हमने भावनाओं से विवश हो कर कुछ ईंट पत्थर विरोधियों पर फेंक दिये तो इससे उन का कुछ बिगड़ेगा नहीं और न हम को ही कुछ लाभ मिलेगा, अल्बत्ता इससे हमारे लिए बड़ी हानि की आशंका अवश्य है। कोई मनुष्य कितना ही अत्याचारी तथा अशुभचिन्तक (बुरा चाहने वाला) हो इसकी इच्छा होती है कि अत्याचार करने के लिए उसको कोई तर्क मिल जाए, शैतान ने भी अपनी अवज्ञा के लिए एक तर्क ढून्ढ लिया था कि हज़रत आदम मिट्टी से बनाए गए हैं और मैं आग से, मिट्टी आग से नीच है, इसलिए वह आदम को सज्दा नहीं करेगा।

अगर हम उत्तेजित तथा सहन रहित हो कर कोई नासमझी का काम कर बैठेंगे तो जो लोग अपने सीनों में हम से बैर छुपाए हुए हैं, उनको हम पर अत्याचार करने के लिए तर्क मिल जाएगा। अतः हम को किसी भी अवसर पर उत्तेजित हो कर कोई नासमझी का काम न कर बैठना चाहिए अपितु धैर्य के साथ बुद्धि से काम लेना चाहिए।

ख़ुदा की मदद का दूसरा हथियार ''सलात'' (नमाज़) है। नमाज़ एक ऐसी इबादत है जिसमें इन्सान खुदा के सामने अपने आपको पूर्णतः बिछा देता है और माथे से ले कर पाँव तक अंग अंग खुदा की बन्दगी में व्यस्त रहता है। अतः नमाज़ वास्तव में अल्लाह की ओर झुकने का प्रतीक है, अर्थात कठिनाईयों में मनुष्य अपने रब की ओर झुक जाए, वह खुदा की चौखट पर अपना माथा रख दे, कि हम मुहताज (आश्रित) हैं तू ग़नी, हम फ़क़ीर हैं, तू दाता, तू इन हाथों को खाली वापस न कर, ख़ुदा की शक्ति अत्यधिक है, असीमित है, यूँ तो हम रात दिन खुदा की कुदरत देखते रहते हैं, लेकिन यह कुदरत अस्बाब (कारणों) के पर्दे में जाहिर होती है, कभी कभी खुदा की कुदरत कारण रहित हो कर मनुष्य की दृष्टि में आती है। ध्यान दो कि जब हज़रत मूसा अलै0 और बनी इसराईल का पीछा करने के लिए फिरऔन की सेना एकत्र हो रही थी और घमण्ड के साथ आगे बढ़ रही थी, तो लोग यही समझ रहे थे कि यह सेना मुसलमानों को नष्ट करने के लिए बढ़ रही है। लेकिन अल्लाह के यहाँ यह बात मुकद्दर (लिखी हुई) थी कि इनका यह गुरोह खुद उनके विनष्ट होने का साधन बन जाए, अतएव वही हुआ,

अर्थात फिरऔन अपनी सेना के साथ समुद्र में डुबा दिया गया। बद्र की लड़ाई में बड़े–बड़े सोरमा वीर मक्के से चले आए थे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके विषय में फरमाया कि मक्के ने अपने जिगर के टुकड़ों को तुम्हारे सामने डाल दिया है। उनके जोश व खरोश को देख कर लोगों के दिलों में खयाल गुजरा होगा कि यह तो मदीने की ईंट से ईंट बजा देंगे, लेकिन किसे ख़बर थी कि उन सोरमाओं को स्वयं मौत से दो चार होना पड़ेगा और मक्के वालों को उनसे नजात मिल जाएगी और भविष्य में मक्के वालों के लिए इस्लाम की दावत क़बूल करना सरल हो जाएगा। ''अहज़ाब'' की लड़ाई में इत्तिहादियों (एकता वालों) की एक पहाड़ जैसी सेना इसलिए एकत्र हुई थी कि मुसलमानों के मुक़ाबले में तमाम इस्लाम विरोधी ताक़तों को एक कर दिया जाए, लेकिन अल्लाह तआला का यह फैसला था कि वह इसमें असफल हों और उनका यह अन्तिम प्रयास इस प्रकार असफल हो कि सदैव के लिए उनकी हिम्मत टूट जाए और उनका इत्तिहाद (एकता) बिखर कर रह जाए।

इसलिए हम को हर हाल में खुदा की तरफ़ लौटना चाहिए और उससे मदद मांगना चाहिए, जो हर बात पर कुदरत रखता है, वह चाहे तो समय की सुपर ताकतों को पल भर में राख का ढेर बना दे और अपने कमज़ोर बन्दों को लोहे और फौलाद से अधिक दृढ़ बना दे।

सलात का एक अर्थ दुआ भी है, दुआ का उद्देश्य यही है कि मोमिन दुआ के ज़रीये खुदा के गैबी खज़ाने से मदद हासिल करे, यह सब्र (धैर्य) और रुजूअ़ इलल्लाह (अल्लाह की ओर प्रत्यागमन) अल्लाह की मदद की कुन्जी और सफलता का हथियार है, और बे सब्री (धैर्य रहित होना) और खालिक़ के बजाए मख़्लूक़ पर भरोसा करना (सृष्टा को छोड़ कर सृष्टि पर भरोसा करना) मोमिन के लिए असफलता का पूर्वभास (पेश खेमा) है। अतएव अल्लाह का आदेश है कि सब्र (धैर्य) और सलात (नमाज़ अथवा दुआ) द्वारा अल्लाह से मदद चाहो, निःसन्देह अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है, यह अन्तिम बात सब्र की और अधिक ताकीद के लिए है। सब्र एक कठिन कार्य है, सब्र अपनी भावनाओं की आग को बुझाना तथा अपनी इच्छाओं को वध कर देने जैसा है। मनुष्य का किसी उद्देश्य के लिए जान दे देना सरल है, परन्तु किसी उद्देश्य के लिए घुट घुट कर मरना और

शेष पृष्ठ ....28...पर

आप के प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में क्या अक़ीदे रखना चाहिए?

उत्तर: आप सल्ल0 अल्लाह तआला के बन्दे, एक इन्सान और अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह तआला के बाद आप तमाम मख़्लूक़ से अफ़्ज़ल हैं आप गुनाहों से मासूम हैं, आप पर अल्लाह ने कुर्आन मजीद नाज़िल फरमाया, आप को शबे मेराज में अल्लाह तआला ने अस्मानों पर बुलाया और जन्नत व दोज़ख वगैरा का मंज़र दिखाया, आपने अल्लाह तआला के हुक्म से बहुत से मुअ़जिज़े दिखाए, आप अल्लाह तआ़ला की बहुत ज़ियादा इबादत और बन्दगी करते थे, आपके अखलाक़ व आदात निहायत आला दर्जे के थे, आपको अल्लाह तआला ने बहुत सी गुजरी हुई और आने वाली बातों का इल्म अता फरमाया था जिन की आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत को ख़बर कर दी। आप को अल्लाह तआला ने तमाम मख़लूक़ से ज़ियादा इल्म अता फरमाया था लेकिन आप आ़लिमुल—गैब नहीं थे, क्योंकि आ़लिमुल—गैब होना सिर्फ अल्लाह तआला की शान और उसी की खास सिफत है, आप पर नुबूवत खत्म हो गई आप आखिरी नबी हैं आप के बाद कोई नया नबी नहीं आयेगा। अलबत्ता सिर्फ हज़रत ईसा अलै0 जो पहले ज़माने के पैगम्बर हैं, आसमान से उतरेंगे और इस्लामी शरीअत की पैरवी करेंगे, आप इन्सानों और जिन्नात सब के लिए रसूल हैं। आप क़ियामत के रोज़ अल्लाह तआला की इजाज़त से गुनहगारों की शफाअ़त करेंगे, इसी वजह से हुज़ूर को शफ़ीउल—मुजनिबीन कहते हैं और अल्लाह तआला हुज़ूर की शफाअत कबूल भी फरमाएगा, आपने जिन बातों का हुक्म दिया है, उन पर अमल करना और जिन से मना किया है उनसे बाज़ रहना और जिन वाकिआ़त की ख़बर दी है, उनको उसी तरह मानना और यक़ीन करना उम्मत पर ज़रूरी है आप से मुहब्बत रखना और आप की तअ़ज़ीम और तकरीम करना हर उम्मती के जिम्मे लाज़िम है। लेकिन तअ़ज़ीम से मुराद वही तअ़ज़ीम है जो शरई क़ाइदे के मुवाफ़िक़ हो, और खिलाफे शरअ़ बातों को तअ़ज़ीम समझना नादानी है।

प्रश्न: हुज़ूर की मेराज जिस्मानी थी या मनामी?

उत्तर: हुज़ूर अपने जिस्मे मुबारक के साथ मेराज में तशरीफ ले गये थे, इसलिए आपकी मेराज जिस्मानी थी। हाँ इस जिस्मानी मेराज के

अलावा चन्द बार हुजूर को ख्वाब में भी मेराज हुई है वह मनामी मेराजें कहलाती हैं उनकी तादाद चार या पाँच है। (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

प्रश्न: किस क़िस्म के गुनाहों की मुआफ़ी के लिए शफाअ़त होगी?

उत्तर: कुफ्र, शिर्क के अलावा तमाम गुनाहों की मुआ़फी के लिए शफाअत हो सकती है।

प्रश्न: क्या यह कह सकते हैं कि हिन्दू हज़रात के पेशवा जैसे कृष्ण जी और राम चन्द्र जी वगैरा ख़ुदा के पैगम्बर थे?

उत्तर: जब तक कुर्आन या हदीस से किसी के बारे में नबी होना साबित न हो हम उस को नबी नहीं कह सकते, राम और कृष्ण को कुर्आन और हदीस में नबी नहीं बताया गया है इसलिए हम उनको यक़ीन के साथ नबी नहीं कह सकते अल्बत्ता बहुत से ऐसे अंबिया गुज़रे हैं जिनके नाम कुर्आन और हदीस में नहीं आए हैं इसलिए हम राम और कृष्ण की पैगम्बरी का इन्कार भी नहीं कर सकते, हो सकता हैं वह पैगम्बर रहे हों, मगर शैतान ने उनकी तालीमात को मिटा दिया हो और उनके मानने वाले उनको खुदा कहने लगे हों मगर सहीह बात अल्लाह ही को मालूम है हम को चाहिए कि हम राम और कृष्ण की बे अदबी न करें। लेकिन उनको खुदा मानना खुला हुआ शिर्क है।

प्रश्न: वित्र की नमाज़ वाजिब है या सुन्नत? और उस की कितनी रकअ़तें हैं?

उत्तर: अहनाफ के नज़दीक वित्र की नमाज़ वाजिब है और तीन रकअतें वाजिब हैं।

प्रश्न: वित्र की नमाज़ इशा में पढ़ना चाहिए या तहज्जुद में?

उत्तर: वित्र की नमाज़ रात के अखीर हिस्से में पढ़ना अफ्ज़ल है, लेकिन अगर पिछली रात उठना और वित्र पढ़ सकना यकीनी न हो तो इशा के फर्ज़ और सुन्नतों के बाद तीन रकअ़त वित्र पढ़ लेना चाहिए ताकि वाजिब न छूटे।

❖❖❖

अल्लाह की मदद की कुंजी.....

अपनी भावनाओं को बार बार फाँसी के तख़्ते पर चढ़ाना बड़ा कठिन है, किसी कवि ने इस को यूँ कहा है–

सुलगना और शै है,
जल के मर जाने से क्या होगा
हुआ है काम जो हम से
वह परवानों से क्या होगा

विद्यमान परिस्थिति में हम को अपने आप में साहस पैदा करना चाहिए, हमारे हृदय तथा मन साहस तथा उत्साह से भरे हुए हों, हमारी भावनाओं के घोड़े की लगाम ज्ञान तथा बुद्धि के हाथों में हो, हमारे माथे में खुदा पर विश्वास का प्रकाश हो और हमारे हाथ अपने खालिक़ (निर्माता) की ओर उठे हुए हों, यही हमारे लिए सफलता का मार्ग है और इसी तरह हम अल्लाह की मदद (सहयोग) के अधिकारी हो सकते हैं।

❖❖❖

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का आचार-व्यवहार

—नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

ख़ाकसारी और नम्रताः–

नम्रता के कारण आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उकड़ू बैठ कर खाना खाते और कहा करते कि मैं बन्दा हूँ और बन्दों की तरह खाता हूँ, तथा बन्दों की ही तरह बैठता हूँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार ऐसे ही बैठे थे, लोग अधिक थे, जगह कम थी। एक दहकानी ये देख कर बोल उठा कि मुहम्मद! ये बैठने का कौन–सा ढंग है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा, ख़ुदा ने मुझे ख़ाकसार बन्दा बनाया है, क्रूर और अत्याचारी नहीं।

एक बार एक अन्सारी सहाबी ने एक यहूदी को कहते हुए सुना कि उस ख़ुदा की क़सम! जिसने मूसा अलै0 को समस्त मानव पर श्रेष्ठता दी। वह अन्सारी ये समझे कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की श्रेष्ठता पर आक्षेप है, अतः उन्होंने गुस्से में आकर उसे थप्पड़ मार दिया। वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास फरियादी बन कर आया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन सहाबी को बुलाया और वास्तविकता जानी, फिर कहा, मुझ को सन्देष्टाओं पर श्रेष्ठता न दो।

(सीरतुन्नबी)

हज़रत अनस रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार हज करने गए, मैंने देखा कि जो चादर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिस्म पर थी उसकी क़ीमत चार दिरहम से अधिक न थी।

(रहमतुल लिल आलमीन)

लालसा रहित जीवनः–

हज़रत अबू तल्हा रज़ि0 कहते हैं कि एक दिन मैंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि मस्जिद में ज़मीन पर लेटे हुए हैं और भूख के कारण बार–बार करवटें बदल रहे हैं।

एक बार सहचरों (सहाबा) ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपनी भुखमरी की शिकायत की और पेट खोल कर दिखाया कि पत्थर बंधा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी पेट से कपड़ा हटाया तो एक के बजाय दो पत्थर बंधे थे।

अक्सर भूख के कारण आवाज़ इतनी धीमी और कमज़ोर हो जाती कि सहाबा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हालत समझ जाते थे। एक दिन हज़रत अबू

तल्हा रज़ि0 घर में आए और पत्नी से कहा कि कुछ खाने को है? मैने अभी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि उनकी आवाज़ कमज़ोर हो गई है।

(सीरतुन्नबी)

सामान्यतः ऐसा होता कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुबह में अपनी पवित्र पत्नियों के पास जाते और पूछते कि आज कुछ खाने को है? वो कहतीं कि 'नहीं' आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहते, अच्छा मैंने रोज़ा रख लिया है।

एक बार हज़रत उमर रज़ि0 ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कोठरी में प्रवेश किया तो उन्हें दिखाई दिया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर में सांसारिक जीवन से जुड़ी वस्तुओं की क्या स्थिति है। पवित्र शरीर पर लुंगी है, एक खुर्री चारपाई बिछी हुई है। सरहाने एक तकिया है, जिसमें खजूर की छाल भरी है। एक तरफ थोड़ा सा जौ रखा है। एक कोने में पवित्र पैर के पास किसी जानवर की खाल पड़ी है, कुछ मश्कीज़ें (चमड़े से निर्मित पानी का बर्तन) खूंटी पर लटक रहे हैं। ये देख कर हज़रत उमर रज़ि0 कहते हैं कि मेरी आँखों से आँसू जारी हो गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रोने का कारण पूछा तो कहा कि मैं क्यों न रोऊँ? चारपाई के बान से पवित्र शरीर में निशान पड़ गए हैं। ये आपके वस्तुओं की कोठरी है, इसमें जो कुछ भी है, मेरी आँखों के सामने हैं। क़ैसर और किसरा तो बाग़ व बहार के मज़े लें और आप अल्लाह के निकटतम संदेष्टा हो कर आपके घरेलू वस्तुओं की ये स्थिति! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा, ऐ ख़त्ताब के बेटे! तुम को ये पसन्द नहीं कि वह दुन्या लें और हम परलोक (आख़िरत)।

सद्व्यवहारः-

एक अवसर पर किसी से ऊँट क़र्ज़ लिया और वापस किया तो उससे अच्छा ऊँट वापस किया और कहा कि सबसे बेहतर वह लोग हैं जो क़र्ज़ को प्रसन्नतापूर्वक अदा करते हैं।

एक दिन एक देहाती आया जिसका क़र्ज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़िम्मे था। उसने सख़्ती से बात की। सहचरों ने उस अशिष्टता पर उसको डांटा और कहा, तुझे पता भी है कि किससे बात कर रहा है? बोला, मैं अपना हक़ माँग रहा हूँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा (सहचरों) से कहा, तुम लोगों को उसका साथ देना चाहिए, क्योंकि उसका हक़ है। उसके बाद सहाबा को क़र्ज़ चुकाने का आदेश दिया बल्कि अधिक ही दिलवाया।

❖❖❖

सहाबा का मक़ाम व मरतबा

—मौलाना सय्यिद बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी
—हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

इमामों का एतिराफे फ़ज़्लः–

सहा—बए—किराम रज़ि0 की जमाअ़त वह कुदसी जमाअ़त (महापुरूषों का संघ) है जिसको अल्लाह तआला ने अपने आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुहबत (संगत) के लिए और उम्मत की हिदायत के लिए चुना था, यही वजह है कि उलमाए उम्मत ने हमेशा सहाबा की तन्क़ीस (अपमान) करने वालों के बारे में सख़्त कलिमात इरशाद फरमाए हैं, मैमूनी रह0 कहते हैं—

अनुवादः *मैंने इमाम अहमद रह0 को यह कहते हुए सुना, आखिर क्या हो गया है कि लोग हज़रत मुआविया रज़ि0 की बुराई करते हैं, हम अल्लाह से आफीयत के तलबगार हैं इमामे अहमद ने मुझ से कहा— अगर तुम किसी शख्स को देखो कि वह सहाबा का ज़िक्र बुराई के साथ कर रहा है तो उसके इस्लाम को मश्कूक (सन्दिग्ध) समझो''।*

इमाम मुस्लिम के उस्ताद इमाम अबू ज़ुरआ़ रह0 कहते हैं—

अनुवादः *''जब तुम किसी शख्स को देखो कि वह किसी सहाबी की तन्क़ीस (निन्दा) कर रहा है तो समझ लो कि वह ज़िंदीक़ (विधर्मी) है, इसलिए कि हमारे नज़दीक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हक़ हैं, और कुर्आन हक़ है, कुर्आन व सुन्नत हम तक पहुंचाने वाले यही सहा—बए—किराम हैं, यह तन्क़ीस करने वाले हमारे गवाहों को मजरूह (दोषित) करना चाहते हैं, ताकि किताब व सुन्नत को बातिल (मिथ्या) साबित करें, लिहाज़ा खुद उनको मजरूह करना ज़ियादा मुनासिब है, यह ज़िन्दीक (विधर्मी) हैं''।*

हज़रत इब्राहीम बिन सईद जौहरी रह0 ने हज़रत अबू उसामा रह0 से पूछा कि हज़रत मुआविया रज़ि0 और हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह0 में अफ़्ज़ल कौन है? तो उन्होंने कहा—

अनुवादः *''हम अस्हाबे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बराबर (सहाबा के बाद वालों में से) किसी को नहीं समझते, अफ़्ज़ल होना तो दूर की बात है।''*

इमाम ज़हबी रह0 फरमाते हैं, अनुवाद ''जिसने सहाबा पर तअ़न व तशनीअ़ की या उन को बुरा कहा, वह दीन से निकल गया, और मिल्लते इस्लामिया से खारिज़ हो गया। इसलिए उन पर तअ़ना ज़नी (तिरस्कार) उसी वक़्त मुम्किन है जब उनकी बुराई का अक़ीदा हो, उन के तईं दिल में हसद व कीना हो और किताब व सुन्नत में वारिद उन के फज़ाइल व मनाक़िब का इन्कार कर

दिया जाये, नीज़ इसलिए कि यह हज़रात शरीअते मासूरा के निहायत पसन्दीदा वसीला और दीने मन्कूल का वास्ता हैं, वास्ता व ज़रीआ़ को मजरूह करना अस्ल दीन को मजरूह करना है, नीज़ इसलिए कि नाकिल की तहक़ीर (अपमान) खुद मन्कूल की तहक़ीर है, गौर व फिक्र से काम लेने वाले और निफाक़ व इलहाद व ज़िन्दिक़ा से पाक किसी शख्स के लिए यह हक़ीक़त बिल्कुल अयां है।''

वह मज़ीद लिखते हैं–

अनुवादः *''जिसने सहाबा की किसी तरह से बुराई की उनकी लग़ज़िश जूई (भूल चूक ढूँन्ढ़ने की कोशिश) की, उनके ऐब को बयान किया, उनकी तरफ़ किसी ऐब को मन्सूब किया, वह मुनाफिक़ है, हर मुसलमान का फरीज़ा है कि वह अल्लाह, उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, आपके लाये हुए दीन और इक़ामते दीन का फरीज़ा अंजाम देने वालों, आप का उस्वा इख़्तियार करने वालों, आप की सुन्नत पर अमल करने वालों, आप के सहाबा अज़वाज, औलाद, गुलामों और उन लोगों से महब्बत करने वालों से महब्बत रखे और उन से बुग्ज़ रखने वालों से बुग्ज़ रखे''।*

क़ाज़ी अ़याज़ रह0 शारेह मुस्लिम तहरीर करते हैं, अनुवाद ''आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, के सहाबा की तौक़ीर व तअ़जीम हो, उन के साथ हुस्ने सुलूक (सद्व्यवहार) किया जाये, उनके हक़ को पहचाना जाये, उनकी इक्तिदा की जाये, उनके लिए दुआ व इस्तिगफ़ार किया जाये, उनके आपसी झगड़ों को बयान न किया जाये, उनके दुश्मनों से दुश्मनी की जाये और तारीख़ लिखने वालों व जाहिल रिवायत करने वालों और गुमराह शीओ़ं और अहले बिदअत की उन खबरों को नज़र अन्दाज़ किया जाये जो सहाबा में किसी की भी शान घटाती हों''।

इब्ने हज़्म रह0 ने लिखा है, अनुवादः सहाबा का मामला आम लोगों से अलग है रूए ज़मीन का कोई शख्स (जो सहाबी न हो) किसी अदना सहाबी के दर्जे को पा सके इसकी कोई शक्ल नहीं।''

अल्लामा कुरतबी रह0 लिखते हैं–

अनुवादः *''जिसने नबी की सुहबत पाई और ज़िन्दगी में एक बार भी (ईमान के साथ) आप का दीदार कर लिया वह बाद वालों से अफ्ज़ल है, सहाबीयत की फज़ीलत के बराबर कोई अमल नहीं।''*

बेअ़सते मक्रूनाः–

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआ़ला ने उम्मत के तज़किया और तअ़लीम के लिए भेजा था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुअ़ल्लिमे अव्वल (प्रथम गुरु) थे तो सहाबा रज़ि0 उम्मत तक इस तअ़लीम को मुन्तकिल (ट्राँसफर) करने का सब से पहला जरीआ़ हैं

और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शागिर्द हैं और पूरी उम्मत के मुअ़ल्लिम हैं, हज़रत शाह वलीयुल्लाह देहलवी रह0 ''हुज्जतुल्लाहुल–बालिगा'' में तहरीर फरमाते हैं–

अनुवादः *''नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेअसत के साथ एक दूसरी बेअ़सत भी शामिल है।''*

शाह साहिब इसको दूसरी जगह इस तरह वाज़ेह फरमाते हैं ''सब से कामिल बेअ़सत उस नबी की होती है जिस की बेअ़सत ''मक्रून'' होती है, यानी उसकी बेअ़सत के साथ एक पूरी क़ौम तब्लीग व दावत पर मामूर और उस की फैज़े सुहबत से तैयार हो कर दूसरे इन्सानों की तालीम व तरबीयत का ज़रीआ बनती है। नबी की बेअ़सत बिल–असालत होती है (और उसको नुबूवत कहते हैं)। उम्मत की मामूरीयत और तफ्वीज़े खिदमत की नौईयत बिलवास्ता व बिन्नियाबा होती है। नबी की बेअ़सत (प्रेषण) बिल–असालत यानी बिला वास्ता (माध्यम रहित) अल्लाह की तरफ से बराहे रास्त नबी को मिलती है। इसी को नुबूवत कहते हैं जब कि नबी द्वारा प्रशिक्षित (तरबीयत याफ़्ता) सहाबा की बेअ़सत (प्रेषण) नबी के नाइब (प्रतिनिधि) की हैसीयत से होती है वह अपने नबी का काम जारी रखते हैं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेअ़सत ऐसी ही जामे (व्यापक) बेअ़सत थी, जिसके साथ एक पूरी उम्मत को आपके मन्सबे नुबूवत (नुबूवत के कामों) की खिदमत व इशाअत के लिए आ–लए–कार (कार्य उपकरण) बनाया गया, और उसके लिए बेअ़सत के हम माने अल्फाज़ इस्तेमाल किये गये। कुर्आन मजीद में फरमाया गया–

अनुवादः *''जितनी उम्मतें पैदा हुईं तुम उनमें सबसे बेहतर हो, लोगों को नेक काम करने को कहते हो और बुरे कामों से मना करते हो।''*

(आले इमरानः 110)

और हदीस में बेअसत ही का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहा–बए–किराम को मुखातब करके फरमाया–

अनुवादः *''तुम आसानी पैदा करने के लिए पैदा किये गये हो, मुश्किल पैदा करने के लिए नहीं मबऊस (प्रेषित) किये गये हो''।*

मुक़ामे सहाबाः–

जिस तरह नुबूवत एक इम्तियाज़ (विशेषता) है और यह उम्मत का अक़ीदा (विश्वास) है कि न कोई फिरिश्ता यह मुक़ाम (पद) पा सकता है और न कोई वली, यह वह आस्मान है कि कोई उसकी बुलन्दी को नहीं छू सकता, किसी मोमिन का ईमान मुअतबर (विश्वस्नीय) नहीं जब तक वह अंबिया की नुबूवत पर ईमान न रखता हो, इरशाद है–

अनुवादः *''जो कुछ रसूल पर उन के रब की तरफ़ से उतारा गया रसूल भी उस पर ईमान लाये और मुसलमान भी, सब के सब अल्लाह पर ईमान लाये और उस के फिरिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर, हम उसके रसूलों में (ईमान के एतिबार से) फर्क़ नहीं करते।''*

(अल–बकराः 285)

अलबत्ता उनके दरजात में फर्क़ है–

अनुवादः *''यह वह रसूल हैं जिनमें बाज को हमने बाज़ पर फज़ीलत दी, उनमें वह भी हैं जिनसे अल्लाह ने कलाम फरमाया और बाजों के दरजात बढ़ाए''। (अल–बकराः 253)*

इसी तरह नुबूवत के बाद यह शरफे सहाबीयत (सहाबी होने की श्रेष्ठता) भी वह मुक़ाम है जहां तक किसी बड़े से बड़े वली (जो सहाबी न हों) की रसाई नहीं, ब–हैसीयत सहाबीये रसूल के हर एक का मरतबा नुबूवत के नीचे है, लेकिन वलायत से बुलन्द है, जम्हूर मुफस्सिरीन ने तशरीह की है कि (वल्लजीना मअ़हु) आम है (व्यापक है) इस आयत में तमाम सहा–बए–किराम शामिल हैं, यह मअ़ीयत (साथ होना–संगत) चाहे थोड़ी देर के लिए ही क्योंन हो। (जब कि यह संगत ईमान के साथ हो)।

उसके आगे तौरात व इन्जील उनके तज़्किरे का बयान है, इरशाद है–

अनुवादः *''उनकी यह मिसाल तौरात में है और इन्जील में उनकी मिसाल यह है जैसे खेती हो जिस ने अंखवा निकाला फिर उसको मजबूत किया फिर मोटा हुआ फिर अपने तने पर खड़ा हो गया, खेती करने वालों को भाने लगा ताकि वह उनसे इन्कार करने वालों को झल्ला दे, उनमें से जो ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये उन से अल्लाह ने मग्फ़िरत और अज्रे अज़ीम का वादा कर रखा है।''*

(अल–फ़त्हः 29)

अबू अ़रवा जुबैरी रह0 कहते हैं, अनुवादः ''हम एक रोज़ इमाम मालिक की मज्लिस में बैठे थे, तो लोगों ने एक शख्स का ज़िक्र किया जो सहा–बए–किराम को बुरा कहता था, इमाम मालिक ने सूरे फ़त्ह़ की आखिरी आयतें वहां तक पढ़ीं जिसमें कुफ्फ़ार को झल्ला देने का ज़िक्र है और फरमाया कि जिस शख्स के दिल में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से किसी के मुतअल्लिक़ गैज़ (दुश्मनी) हो, वह इस आयत की ज़द में आता है''।

एक आयत में मुहाजिरीन व अन्सार का अलग अलग ज़िक्र करते हुए इरशाद है–

अनुवादः *बिला शुब्हा जो लोग ईमान लाये और उन्होंने हिजरत की और अपने मालों और जानों से अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया और जिन लोगों ने उनको पनाह दी और मदद की वह सब एक दूसरे के दोस्त हैं।'' (अल–अन्फ़ालः 72)*

शेष पृष्ठ ...36...पर

अरबी की दो रूबाअ़ियां (चौपाइयां) और उनका अर्थ

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

हमारे देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी है जिसका प्रभाव यह हुआ कि मुस्लिम घरानों मे भी जिनकी मातृ भाषा उर्दू है, कोई उर्दू लिखने पढ़ने वाला नहीं मिलता जो लड़के दीनी मदरसों में इब्तिदाई तालीम (बेसिक शिक्षा) हासिल करते हैं वह कुछ हद तक उर्दू लिख पढ़ लेते हैं, लड़कों से ज़ियादा मुस्लिम घरानों की लड़कियां उर्दू लिखती पढ़ती हैं या फिर दीनी मदरसों के फारिगीन उर्दू से रब्त रखते हैं इस मजबूरी के सबब अब दीनी बातें फैलाने और लोगों तक पहुंचाने के लिए हिन्दी लिपि का प्रयोग अनिवार्य हो गया है। यद्यपि मुसलमान उर्दू लिपि से दूर हो गए हैं परन्तु उर्दू भाषा से उनका संबन्ध और प्रेम बाक़ी है इसी प्रकार वह अरबी लिखना पढ़ना नहीं जानते हैं लेकिन पवित्र कुर्आन से संबन्ध की वजह से उनको अरबी ज़बान के शब्द ज़बान से अदा करने में आनन्द मिलता है इन्हीं बातों को सामने रखते हुए हम अपने पाठकों के सामने दो अ़रबी रूबाअ़ियां और उनका अर्थ प्रस्तुत कर रहे हैं यह दोनों रूबाअ़ियां अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में कही गई हैं पहली रूबाअ़ी हज़रत शैख सअ़दी अलैहिर्रहमा की है— पढ़ये और आनन्द लिजिए।

बलग़ल—अुला बि कमालिही
कशफ़द्दुजा बि जमालिही
हसुनत जमीअुखिसालिही
सल्लू अलैहि व आलिही

नोटः जो अक्षर पूरा है और उस पर हलन्त नहीं है उसको प्रथक अक्षर की भांति जबर से पढ़ें)

بَلَغَ الْعُلٰى بِكَمَالِهٖ
كَشَفَ الدُّجٰى بِجَمَالِهٖ
حَسُنَتْ جَمِيْعُ خِصَالِهٖ
صَلُّوْا عَلَيْهِ وَ آلِهٖ

अर्थः— कवि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में कहता है कि आप अल्लाह के प्रदान किए हुए अपने कमाल (परिपूर्णता) द्वारा उत्तम स्थान को पहुँच गए यहां तक कि स्वयं अल्लाह तआला ने पवित्र कुर्आन में फरमाया—

अनुवादः *''और बेशक आप अख़्लाक़ के आला मरतबे पर हैं'' (निःसंदेह तुम एक महान नैतिकता के शिखर पर हो)*

(अल—कलमः 4)

आपने अल्लाह की प्रदान की हुई अपनी सुन्दरता द्वारा पूर्ण चन्द्रमा (बद्रे कामिल) की भांति रात के अंधेरे को दूर कर दिया अर्थात नुबूवत के प्रकाश से बातिल (मिथ्या) के अंधेरे को दूर कर दिया

इसको पवित्र कुर्आन में इस प्रकार कहा गया है–

अनुवादः *"हक़ आ गया और असत्य मिट गया।*

(बनी इसराईलः 81)

आपके समस्त गुण उत्तम हैं।

ऐ ईमान वालो आप पर और आप की आल पर दुरूद व सलाम पढ़ो।

दूसरी रूबाअ़ी (चौपाई) शैख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रह0 की हैः–

या साहिबल–जमालि् व या सय्यिदल्–बशर
मिन वज्हिकल्–मुनीरि लक़द् नुव्विरल्–कमर्
ला युम्किनिस्सनाउ कमा काना हक्कुहू
बाद अ़ज़ ख़ुदा बुज़ुर्ग तुई क़िस्सा मुख़्तसर्

یا صاحب الجمالِ و یا سیّدالبشر
من وجهکَ المنیرِ لقدنُوّر القمر
لایُمکِن الثناءُ کما کان حَقُّهُ
بعد از خدا بزرگ توئی قصّه مختصر

कवि अपनी कल्पना में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित है और आपको संबोधित कर के निवेदन कर रहा हैः–

हे प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सौंदर्य वाले और हे मानव जाति के सरदार चन्द्रमा को जो प्रकाश मिला है वह आपके चेहरे के प्रकाश से मिला है।

अल्लाह तआला ने आप को ऐसे उत्तम गुणों वाला तथा विशेषताओं वाला बनाया है कि आप की जैसी प्रशंसा होना चाहिए वह सम्भव नहीं है बस यह कह सकते हैं कि अल्लाह के पश्चात आप ही सब से बड़े हैं अर्थात अल्लाह ने अपनी सृष्टि में सबसे बड़ा आप ही को बनाया है।

(सल्लल्लाहु अलैहि व अ़ला आलिहि व सल्लम)

❖❖❖

सहाबा का मक़ाम.....

कुर्आन मजीद में तज़्किराः–

अल्लाह तआला ने कुर्आन मजीद में जा बजा सहाबा के मुक़ाम का तज़्किरा फरमाया है, सूरे फत्ह की आखिरी आयतों में फरमाया–

अनुवादः *"मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के रसूल हैं और जो उनके साथ हैं वह इन्कारियों पर जोर आवर हैं आपस में महरबान हैं आप उन्हें रुकूअ़ और सज्दे करते देखेंगे, वह अल्लाह का फ़ज़्ल और खुशनूदी चाहते हैं, उनकी अलामतें सज्दों के असर से उनके चेहरों पर नुमायां हैं।"*

(अल फ़त्हः 29)

बैअ़ते रिज़्वान में शरीक़ होने वालों के मुक़ाम का तज्किरा अलग से मौजूद है–

अनुवादः *"अल्लाह उन ईमान वालों से खुश हो गया जब वह दरख़्त के नीचे आप से बैअ़त कर रहे थे उसने उनके दिलों को परख लिया फिर उन पर सुकून उतारा और क़रीब ही एक फ़त्ह उनको इन्आ़म में दी।"*

(अल–फ़त्हः 18)

जारी.....

❖❖❖

इस्लाम में बेटियों के पालन पोषण और उनकी शिक्षा-दीक्षा की श्रेष्ठता

—मौलाना शाह मुईनुद्दीन अहमद नदवी रह0 —हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

इस्लाम ने लड़कियों के पालन पोषण को पुण्य कार्य और उसे आखिरत (अगले जीवन) में मोक्ष का साधन बताया है और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लड़कियों के पालन पोषण करने वाले को शुभ सूचना दी कि वह कियामत में मेरे साथ होगा, हज़रत अनस रज़ि0 से वर्णित है कि ''अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो व्यक्ति दो लड़कियों का पालन पोषण करे यहां तक कि वह जवान हो जाएं तो क़ियामत में मेरा उस का साथ (दो उंगलियों को मिला कर फरमाया) इस प्रकार होगा।'' (सहीह मुस्लिम)

इमाम बुखारी रह0 ने ''अदबुल मुफरद'' में कई रिवायतें नकल की हैं, जिस व्यक्ति के दो या तीन बेटियाँ हों और उसने उनका भली भांति पालन पोषण किया और उनको अच्छी शिक्षा दी तो वह जन्नत में होगा।

मुस्लिम की रिवायत में है कि जिस व्यक्ति के यहाँ कई बेटियाँ पैदा हुईं उस ने उनको भली भांति पाला पोसा उन को अच्छी शिक्षा दी और उनको शिष्ट बनाया तो वह बेटियाँ उसके लिए दोज़ख से आड़ बन जाएँगी अर्थात दोज़ख से बचाव का साधन बन जाएँगी।

सुन्ने अबू दाऊद में है, जिस व्यक्ति ने तीन लड़कियों को पाला पोसा फिर उन की भले युवकों से विवाह कर दिया और उनके साथ भला व्यवहार किया वह जन्नत में दाखिल होगा। इस्लाम ने बेटों और बेटियों के साथ सद्व्यवहार में कोई अंतर नहीं रखा है, दोनों को बराबर का हक़ दिया है, अतः लड़के और लड़कियों के साथ सद्व्यवहार में कोई अंतर न करना चाहिए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस व्यक्ति के यहाँ बेटी पैदा हो वह उसको जीवित रखे, उसको भली भाँति पाले पोसे उसका अपमान न करे और पालने पोसने के व्यवहार में बेटे को बेटी पर वरीयता न दे तो उसको अल्लाह तआ़ला जन्नत में दाखिल करेगा।

जो लड़की शादी के पश्चात बे सहारा हो जाए अर्थात बाप के अतिरिक्त उसका कोई सहारा न हो, उसकी किफालत (पोषण) बड़े पुण्य का काम है।

एक बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुराक़ा बिन जअ़शम से फरमाया कि क्या मैं तुम को बहुत बड़े पुण्य का काम बताऊँ? सुराक़ा ने

निवेदन किया हाँ या अल्लाह के रसूल! फरमायाः उस लड़की की किफ़ालत (पोषण) जो तुम्हारे पास लौटा दी गई हो और उस के लिए तुम्हारे सिवा कोई दूसरा कमाने वाला न हो।

पवित्र कुर्आन में औरतों से जिन चीज़ों पर बैअ़त लेने का आदेश है, उनमें एक यह भी है कि ''अपनी संतान (बच्ची हो या बच्चा) को मार न देंगी।'' इस आदेश में भ्रूण हत्या का वर्जित होना स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है।

इस आयत के उतरने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैअ़त लेते समय मर्द हो या औरत उससे प्रण लेते थे कि वह अपनी संतान को (बच्ची हो या बच्चा) क़त्ल न करेंगे। (बुखारी)

इस सिलसिले में यह आयत हर्फे आखिर का हुक्म रखती है कि क़ियामत के हौलनाक दिन में ''जब ज़िन्दा दरगोर की जाने वाली (जीवित गाड़ दी जाने वाली) लड़की से पूछा जाएगा कि वह किस गुनाह की सजा में क़त्ल की गई'' तो हत्यारों पर क्या बीतेगी और वह उस सुवाल का क्या जवाब देंगे?

लड़की का क़त्ल तो महा पाप है ही उस की मरने की इच्छा करना भी निशिद्ध है। अल–अदबुल–मुफरद में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 के पास एक आदमी था जिस के कई बेटियाँ थीं, उसने उन की मौत की तमन्ना (आकाँक्षा) जाहिर की, इब्ने उमर बहुत क्रोधित हुए और फरमाया क्या तुम उनको रिज़्क (आजीविका) देते हो?

लड़कों की पैदाइश के पश्चात उनके पालन पोषण में सबसे पहला काम उनके दूध पिलाने के समय का निर्धाण करने का है जिसको पवित्र कुर्आन में स्वयं निर्धारित कर दिया है, अनुवादः *और माएँ अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलाएं, यह समय उसके लिए है जो दूध पिलाने का समय पूरा करे और बच्चे वालो (बाप) पर उन माओं का खाना और कपड़ा दस्तूर के मुताबिक है''। (अल–बकराः30)*

खाने कपड़े की शर्त इसलिए लगाई कि अगर दूध पिलाने के समय में शौहर ने बीवी को तलाक़ दे दी तो भी उस का खाना कपड़ा शौहर के जिम्में रहेगा, अगर बच्चे का बाप किसी दूसरी औरत से दूध पिलवाये तो उसका खाना कपड़ा बच्चे के बाप के जिम्मे होगा, वरना जाहिर है कि बीवी का नान व नफ़्क़ा (खाना कपड़ा) तो शौहर ही के ज़िम्मे है, उसके लिए शर्त की ज़रूरत ही न थी, इस आयत से यह बात भी सिद्ध होती है कि औलाद जब तक बड़ी हो कर खाने कमाने के क़ाबिल न हो जाए उसकी किफालत (पोषण) वालिद के ज़िम्मे है। हदीसों में इसका स्पष्टीकरण मौजूद है।

संतान के विषय में विभिन्न आदेशः–

हज़रत सौबान रज़ि0 से वर्णित है कि अल्लाह के

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि ''सर्वश्रेष्ठ दीनार (सोने का सिक्का) वह है जिस को आदमी अपने बीवी बच्चों पर खर्च करे और जिस को अल्लाह की राह में अपने साथियों पर खर्च करे।''

इस रिवायत के एक रावी ''अबू कुलाबा'' कहते हैं कि पहले आप ने बीवी बच्चों (अहल व अ़याल) का ज़िक्र किया और फरमाया कि उस शख्स से बड़ा अज्र किस का हो सकता है जो अपने छोटे बच्चों पर खर्च करता है और इस तरह उनको दूसरों की मदद की ज़रूरत नहीं रहती। (जामे तिर्मिजी)

औलाद को खुशहाल छोड़ना नैतिक कर्तव्य है, इसलिए तर्के में एक तिहाई से ज़ियादा की वसीयत जाइज़ नहीं।

हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि0) धनवान सहाबी थे, उनके केवल एक बेटी थी, वह एक बार ऐसे बीमार पड़े कि ज़िन्दगी की उम्मीद बाक़ी न रह गई, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनसे भेंट करने तथा सांतवना देने आए, तो उन्होंने निवेदन किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे पास धन है और मेरी वारिस (उत्तराधिकारी) केवल मेरी एक बेटी है, मैं चाहता हूं कि दो तिहाई धन भले कामों पर खर्च करने की वसीयत कर जाऊँ, आपने फरमायाः नहीं, सअ़द ने अर्ज किया, अच्छा तो आधे की वसीयत कर दूँ, आपने फरमया नही, केवल एक तिहाई की वसीयत करो और एक तिहाई भी बहुत है, अपने बाद अपने वर्सा को खुशहाल छोड़ जाना इससे बेहतर है कि उनको मुहताज छोड़ जाओ और वह दूसरों के सामने हाथ फैलाते फिरें।

(बुखारी–मुस्लिम)

संतान के पालन पोषण के साथ उन की शिक्षा–दीक्षा का दायित्व भी माता पिता पर है, पवित्र कुर्आन में उसको इस प्रकार कहा गया है– अनुवादः *''ऐ ईमान वालो! अपने आप को और अपने अहल व अयाल को दोज़ख की आग से बचाओ। (सूरः तहरीम)*

इससे तात्पर्य अपने बीवी बच्चों को और अपने को उन तमाम बुराइयों से बचाना है जिनके करने से दोज़ख की सजा मिलती है उस शिक्षा में सदाचरण के सब प्रकार आ जाते हैं हदीसों में इसको स्पष्ट किया गया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया आदमी को अपनी संतान को शिष्टाचार की कोई एक बात सिखाना एक साअ़ (तीन किलो दो सौ ग्राम) अनाज खैरात करने से बेहतर है, दूसरी हदीस में है कि पिता का पुत्र को सबसे अच्छा उपहार उसको शिष्ट बनाना है।

इस्लामिक आचरणों की शिक्षा का यह परिणाम था वह संतान जो माता पिता के लिए आपत्ति तथा आपदा समझी जाती थी वह हृदय का भाग और आँखों की

ठन्ढक बन गई, पवित्र कुर्आन में यह दुआ सिखाई गई, अनुवादः ''ऐ हमारे पालन हार! हमारी बीवियों और हमारी औलाद को आँखों की ढन्ढक बना।''

(सूरः फुरकानः6)

इस विषय में सबसे बड़ा आदर्श अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमल है, औलाद से प्रेम तथा महब्बत की बातें हदीसों में उल्लेखित हैं, आप की सब औलादें आपके जीवन ही में मृत्यु को प्राप्त कर गईं थी, केवल हज़रत फातिमा ज़हरा रह गई थीं, उनसे आपको अत्यधिक प्रेम था उनके विषय में आप का कथन है ''फातिमा मेरे हृदय का टुकड़ा है जो उसको क्रोधित करेगा वह मुझे क्रोधित करेगा''।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत फातिमा रज़ि0 से इतना अधिक प्रेम था कि एक बार हज़रत अली रज़ि0 ने हज़रत फातिमा की उपस्थिति में अबू जहल की बेटी को शादी का पैगाम दिया, जब आपको इस की सूचना मिली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ सहाबा के सामने विशिष्ट भाषण दिया और कहा कि ''बनी हिशाम अली से अपनी बेटी का अक़्द करना चाहते हैं और मुझ से इजाज़त माँगते हैं, मैं कभी इसकी इजाज़त न दूँगा, अल्बत्ता अली मेरी बेटी को तलाक़ दे कर निकाह कर सकते हैं, फातिमा मेरे जिस्म का टुकड़ा है जिसने उसको कष्ट दिया उसने मुझ को कष्ट दिया।''

दूसरी हदीसों में इस विरोध का कारण इस प्रकार उल्लेखित है ''मैं किसी हलाल को हराम नहीं करता (वैध को अवैध नहीं ठहराता) और किसी हराम चीज़ को हलाल नहीं करता (और किसी अवैध को वैध नहीं ठहराता) लेकिन अल्लाह की क़सम अल्लाह के रसूल की बेटी उसके दुश्मन की बेटी एक साथ जमा नहीं हो सकतीं।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 जब आपके पास आतीं तो आप उनके स्वागत में खड़े हो जाते और फिर अपने पास बिठा लेते, उन का माथा चूमते, जब सफर में जाते तो सब से आखिर में हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 से वदाअ़ लेते और जब सफ़र से वापस आते तो सब से पहले हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 से मिलते, उनके बेटों हज़रत हसन व हज़रत हुसैन रज़ि0 से आपके प्रेम के वृत्तांत इतनी प्रसिद्ध हैं कि उनके वर्णन की आवश्यकता नहीं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ि0 अपने पीछे एक छोटी बच्ची उमामा नाम की छोड़ गई थीं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उमामा से इतना प्रेम था कि कभी कभी उसको मस्जिद में साथ लाते थे और उसको लिये हुए नमाज़ पढ़ाते थे।

❖❖❖

Nadwatul Ulama
P.O. Box No. 93, Tagore Marg,
Lucknow - 226007 (India)

ندوة العلماء
ص.ب.۹۳/۰، تیغورمارغ،
لکناؤ-۲۲۶۰۰۷ یوبی (الهند)

Date_____ التاریخ_____

09/09/2018 ۲۸/ذی الحجہ ۱۴۳۹ھ

باسمہ تعالیٰ

अपील बराए तामीर जदीद हास्टल

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारूल उलूम नदवतुल उलमा हजरत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमत में लगा हुआ है, दारूल उलूम में इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़ते हैं, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो जाती है। इस सूरतेहाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधक कमेटी ने नये छात्रावास के निर्माण का निर्णय लिया है, जिसका संगे बुन्याद हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम के दस्ते मुबारक से रखा जा चुका है, और अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्ज़िला होगा, 36 कमरे और 2 हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा संबन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें और वह संतुष्टि होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें।

इस निर्माण कार्य पर 3,61,74,600 (तीन करोड़, एक्सठ लाख, चौहत्तर हज़ार, छः सौ) रूपये, और एक कमरे पर लगभग साढ़े चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले खैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा। हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्य ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे।

हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुंचेगा।

मौलाना तकीयुद्दीन नदवी	प्रो0 अतहर हुसैन	मौ0 सईदुररहमान आज़मी नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)	(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)	(मोहतमिम दारूलउलूम, नदवतुल उलमा)

चेक / ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।

NADWATUL ULAMA
A/C NO. 10863759733 (IFSC CODE - SBIN0000125)
(State Bank of India Main Branch, Lucknow.)

और इस पते पर भेजें।

NIZAMAT OFFICE, NADWATUL ULAMA,
P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,
LUCKNOW - 226007 (U.P.)

Phone: +91-522-2741316, Guest House: 2740141, Fax: 2741023
e-mail: nadwa@sancharnet.in, website: www.nadwatululama.org

उर्दू सीखये

—इदारा

नीचे लिखे उर्दू जुम्ले हिन्दी जुम्लों की मदद से पढ़ये

اللہ کے آخری نبی کا نام محمد ہے (صلی اللہ علیہ وسلم)
अल्लाह के आखिरी नबी का नाम मुहम्मद है (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)
آپؐ کے والدِ محترم کا نام عبداللہ ہے۔
आप सल्ल0 के वालिदे मुहतरम का नाम अब्दुल्लाह है।
آپؐ کی محترم والدہ کا نام آمنہ ہے۔
आप सल्ल0 की मुहतरम वालिदा का नाम आमिना है।
آپؐ کے محترم دادا کا نام عبدالمطلب ہے۔
आप सल्ल0 के मुहतरम दादा का नाम अब्दुल मुत्तलिब है।
آپؐ کے پردادا کا نام ہاشم ہے۔
आप सल्ल0 के पर दादा का नाम हाशिम है।
آپؐ کی پیدائش مکہ مکرّمہ میں ہوئی۔
आप सल्ल0 की पैदाइश मक्का मुकर्रमा में हुई।
آپؐ کی پیدائش کی تاریخ میں اختلاف ہے۔
आप सल्ल0 की पैदाइश की तारीख में इख़्तिलाफ है।
مشہور قول سے آپ کی پیدائش ۱۲/ربیع الاول ہے۔
मशहूर क़ौल से आपकी पैदाइश 12 रबीउल–अव्वल है।
آپؐ کی پیدائش دوشنبہ کی صبح کو ہوئی۔
आप सल्ल0 की पैदाइश दोशंबे की सुब्ह को हुई।
آپؐ کی وفات ۱۲/ربیع الاول دوشنبہ کو ہوئی۔
आप सल्ल0 की वफ़ात 12 रबीउल–अव्वल दोशंबे को हुई।
آپؐ کی قبرِ مبارک مدینہ میں ہے۔
आप सल्ल0 की कब्रे मुबारक मदीने में है।
सल्लल्लाहु अलैहि व अ़ला आलिही व सल्लम

RNI No. UPHIN/2002/794
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2018 To2020
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 18 - Issue 09

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-Mail: sachcharahi@nadwa.in

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC & RESEARCH CENTRE

Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Designed By Saleh Mahmood, Lko. Mobile : 7860632916